CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

Rajguru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

6·3

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

७८६

श्रद्धेय दण्डी स्वामी विमलानन्द आश्रम (जी) जी

——— को सादर भेंट —

——— ने, रमाकान्त

पटना।
10.5.92

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आँका सूरज बाँका सूरज

□

कविताएँ

केदार

की

□

उदयाचल
राष्ट्रकवि दिनकर पथ
राजेन्द्रनगर, पटना-८०००१६

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आँका सूरज, बाँका सूरज

(संचयन कविताओं का)

कवि : केदार

संचयन : स्वामी प्रेम जहीर

सर्वाधिकार : © केदारनाथ सिंह

प्रथम संस्करण : फ़रवरी, 1986

मूल्य : 38.00

प्रकाशक : उदयाचल, राष्ट्रकवि दिनकर पथ, राजेन्द्रनगर,
पटना 800 016

मुद्रक : रुचिका प्रिण्टर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली-32

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

समर्पण

उन्हें
जो गा सकते हैं
बस
देर है
स्वर
जागने की

केदार

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आँका सूरज बाँका सूरज

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हर मन में बस गया

क़त्रा, दरिया, बूंद, समन्दर
कितना भीतर? कितना वाहर?
फिर, अस्मत के क्यों व्यापारी
फिर बिकने की क्यों लाचारी?

पीर, औलिया, मुल्ला, पण्डित,
साहेव, गिर्जा, मन्दिर, मस्जिद,
मन्दिर में भगवान् नहीं है
धरती पर इन्सान नहीं है।

उत्तर - दक्खिन, पूरव - पच्छिम
साल, महीना, दिन औ' पल, छिन,
बँटने को आकाश नहीं है,
रुकने वाला समय नहीं है।

कैसे बाँटें?
कैसे रोकें?
बँट जाये वह नहीं गगन है
रुक जाये वह समय नहीं है।

अरे!
बुद्ध पर पागल हाथी?
तीर्थंकर के कर्ण - रन्ध्र में
कील ठोंक दी?
ईश्वर के बेटे को सूली पर लटकाया?
रानी मीरा को प्याला भर जहर पिलाया?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

क़त्रा झूठा !
दरिया झूठा !
मस्जिद झूठी, मन्दिर झूठा !
बच्चे भूखे क्यों मरते हैं ?
सच्चे जेलों में सड़ते हैं !

मन को मन्दिर बन जाना था,
मन को मस्जिद बन जाना था।
मुझको साहेब बन जाना था,
मुझको गिर्जा बन जाना था।

मगर नहीं ऐसा हो पाया
हर मन में हैवान बस गया !
हर मन में शैतान बस गया !
नफ़रत की गर्मी से धरती
झुलस गयी है।

कैसा क़त्रा ?
कैसा दरिया ?
कैसा साहेब, कैसी गिर्जा ?
कैसा मुल्ला,
कैसा पण्डित ?
कैसा मन्दिर,
कैसी मस्जिद ?

—राजनीति के दाँव-पेंच हैं
महलों के संग साँठ - गाँठ है
भोले इन्सानों की रोटी
बन्दर बैठा बाँट रहा है।

क़त्रा, दरिया, बूंद, समन्दर···

25.1.85

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कोई परिचित पदचाप

उस दिन
आकाश धरती पर उतर आया था।

उसकी उँगलियों की गाँठों पर था
पहाड़ का उतार-चढ़ाव
और स्पर्श में था—
दूर झरते
निर्झरों का स्वर।

उसके माथे पर था
बुरांस का
एक टहक लाल फूल,
और उसके काँधे धरे कम्बल पर
रूई के फाहे-जैसी बिछी थी बर्फ़।
चन्दन की एक रेख
पड़ी थी ललाट पर।

उसके होंठ कँप रहे थे
जैसे पतली डाल पर से
अभी-अभी उड़ी हो
कोई गौरैया।

उसकी दृष्टि में थी
ओस की नमी,
साँस में—
कोई रागिनी।
उस दिन
आकाश धरती पर उतर आया था।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

और धुर दक्षिण में
जल उठे थे
पद्मनाभ मन्दिर के असंख्य दीप
महाबलीपुरम का प्रस्तर-रथ-चक्र
समुद्री अट्टहास पर
लुढ़कने लगा था।

गृध्रकूट पर्वतशिखर से
उतरने लगे थे बुद्ध
पीत सागर पर तिरे जैसे
कोई सुविशाल श्वेत पोत
और जेतवन की झाड़ियाँ
ख़रगोश को कुलाँचते देख
काँपने लगी थीं
हँसी के मारे।

चौकन्ने हो उठे थे
मृगदाव के हिरण;
कान खड़े कर
पकड़ना चाह रहे थे वे
कोई परिचित पदचाप!

उस दिन
धरती पर उतर आया था आकाश!

26.10.83

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आज यह…?

उस दिन
सुनते-सुनते तुम्हारा संगीत
लगा
मेरी आँख
बन गयी हो
समुद्र,
अनेक नन्हीं नदियाँ
पटक रही हों सिर—
इसमें गिरने को।

आँसू तो
बहे थे कई बार
टघरते हुए गालों से
धरती पर गिरे थे।

मगर,
समुद्र का नहीं था पता,
एहसास नदियों का न हुआ,
आज यह क्यों हुआ?
आज यह क्या हुआ?

जुलाई, 82

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नहीं लौट जायेगा

कलाएँ हैं मरहम
ज़ख्मों को करतीं मुलायम
टीसें हरती हैं

कलाएँ हैं समुद्र
लोटकर इन पर
जो हवा आती है
सहलाती
छूती
ताप वह मिटाती है।

मगर राहतें बन जातीं ऊब।

नहीं,
कलाएँ हैं ईश्वर की दूत
निर्बाध इन्हें
हृदय तक जाने दो।

स्वच्छ अन्तःप्रकोष्ठ में
कोई जब आयेगा,
विरमेगा;
द्वार देख बन्द नहीं
नहीं लौट जायेगा।

जून, 82

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बाँध नहीं पाओगे

दायरों में बाँधने की कोशिशें लाख करो
बाँध नहीं पाओगे।

हवा हूँ
बँधना नहीं जानता।
बन्धनों की हस्ती
नहीं मानता।

नसीहतें
बाँध नहीं पायेंगी हाथ
बेड़ियाँ बन
प्रशंसाएँ क्योंकर रोक पायेंगी पाँव?

तरलता
मेरा गुण
स्वतंत्रता है धर्म।
भूलूँगा कैसे
जीवन का मर्म?

छीनने को संगीत झरनों का
प्रवाह बन्द करना पड़ेगा,
उनका।
नहीं है संगीत
झरने का,
संगीत तो जीवन का,
झरनों के होने का।

झरना जहाँ-जहाँ होगा
संगीत वहाँ-वहाँ होगा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वतंत्रता जुड़ी है
मेरे होने से,
कैसे बाँध सकोगे ?
कोशिशें लाख करो
दायरों में
बाँध नहीं पाओगे।

24.7.82

कहाँ नसीब होती है ?

संगीत
जब मुझे बाँहों भरता है,
बाँहें तुम्हारी ही होती हैं।
वर्ना, क्यों न हर घड़ी
मैं
संगीत में डूबा होता हूँ ?
भाव की एकरसता
तुम हो
वह कहाँ नसीब होती है ?

मई, 82

भाग जाते

तुम आते
नहलाते गीतों से,
चौंकूं-चौंकूं
जब तक
भाग जाते
हो जाने कहाँ ?

मई, 82

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बड़ा हो जाने दो, जन को

दुनिया
जब छोटी हो गयी है
तो उस सूरज को देखने चलो
जो वियतनाम में उगता
जवान होता क्यूबा में
अमरीका में डूब जाता।

दुनिया
जब छोटी हो गयी है
तो, उस चाँद को देखने चलो,
जो मारिशस में होता निलछौंह
हांग-चौ के वेणुवनों में
ताकता-झाँकता
हिमालय की बर्फ़ भरी चोटियों पर
बिछ जाता।

क़रीब हो गयी है दुनिया जब
चलो, चलते हैं,
पूछते हैं लोगों से,
तलाशते वह नदी—
तूफ़ानी रातों में पार करते थे
जिसे बायरन
या, किश्ती उतारते थे
शेली भी जब-तब।

चलो चलते हैं
इंग्लैण्ड के उन जंगलों में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जिनमें अक्सर
गुनगुनाते फिरते थे टेनिसन
और ढूँढ़ते वह ढोका
जिस पर लिखा था उन्होंने
'टु डे बायरन डायड'
यानी,
'आज बायरन मर गया !'

आओ !
चलते हैं यूनान
कि मिल जाये मिट्टी का कोई कण
छुए होंगे जिसने पाँव—
सुक़रात के।

बर्लिन की हवा में
चलो ढूँढ़ते हैं
एक
कोई बचा-खुचा तार
बिथोवन की
किसी सिम्फ़नी का।

या फिर,
बुलाते हैं विश्व भर को
सजाते बन्दनवार,
बोलपुर के निकट
शान्ति-निकेतन में;
बोध गया
और बेलूर मठ में

बेतवा के तटों को
सजते कचनारों से,
कुटजों से,
अशोक के फूल
लाल रतनारों से।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

छोटी हो गयी है धरती
बड़ा हो जाने दो जन को।
संगीत,
नृत्य
और काव्य से
भर जाने दो त्रिभुवन को।

प्रक्षेपास्त्रों,
ऐटम बमों के
खींच लो प्राण।
भरो उनमें आदमीयत—
संगीत, नृत्य और गान!

28.5.83

हवा की चाल शराबी

गन्दगी पर चादर डाली जा सकती
मगर, हवा का कोई झोंका
गन्दगी के सर से
वह चादर छीन ही लेगा।

गन्दगी
चादर से मोह नहीं रखती
और
हवा की चाल—शराबी
बेख़बर,
अपने चलने से।

1.5.85

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चीख़ने को ज़िन्दगी लाचार

मौत को ताने सुनाती जी रही।
चाव से उसका गरेबाँ सी रही।
ज़िन्दगी।

लेपकर चन्दन
मिटाना चाहती है ताप।
भूल जाना चाहती संवाद।
अजनबी एकान्त क्षण लाते जिसे।

शोर का कुम्बा उठाये माथ पर,
नूपुरों में नृत्य की भरते सुरा।
छोड़कर एकान्त का सान्निध्य
—भाग लेती ज़िन्दगी।

और
मन ऐसा
कि जैसे पात पर की बूंद
जब ज़रा सिहकी हवा
ढुलकी !

रौंदती है ज़िन्दगी को ज़िन्दगी।
काट खाती चूस जाती रक्त।
पीर जगती व्यक्त या अव्यक्त।
टूटता आकाश बारम्बार।
चीख़ने को ज़िन्दगी लाचार।

22.8.85

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बहुप्रतीक्षित एक दिन

मुझे अफ़सोस है
कुछ शब्दों के लिए
क्योंकि
मैंने उनके महल
सूने कर दिये हैं,
दीवारों को कर दिया है निस्तेज,
स्वर्ण कलशों को सामान्य किया है।

मगर,
मैं नादिर नहीं
न तो अँगरेज़,
जिन्होंने
लाल क़िले और ताज को
कर दिया ख़ाली
रत्नों से,
मणियों से।

और, शब्दों का मामला भी
लाल क़िले या ताज-सा है नहीं।
जहाँ भी जड़ो
अभिव्यक्ति के रत्न,
वहीं बन जाता
कोई ताज,
कोई लाल क़िला,
कोई वेटिकन।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

फिर
देर थोड़े लगती
बनते

एलिफ़ैण्टा,
एलोरा,
अजन्ता की गुफाएँ ?

और ज़रूर
लोग उस दिन की अगवानी में खड़े हैं
जब स्वर्ग
धरती पर उतर आयेगा।
अवाम का रुत्बा
ख्वास के रुत्बे में
बदल जायेगा।

तो आओ !
जश्न मनायें,
आकाश को निनदित करें
आनन्द के कोलाहल से,
किरणों को नचायें !

बहुप्रतीक्षित एक दिन का उदय
होनेवाला है।

आओ !
कि पखेरुओं को
जगायें।

7.1.84

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

टूट चुकी है

हंगामा ज़ोरों का,
बहसों का जारी—अटूट सिलसिला।

लोगों का ख़याल
कि बग़ैर पढ़े,
डूबेगा
हिन्दुस्तान का क़ाफ़िला।

वह जो लिख सकते
और वह
जो छाप सकते
ज़ोर-शोर से परेशान हैं—
क्योंकि आम लोग
बजाय ख़रीदने के किताबें
ख़रीदते मूँगफली

या फ़ुटपाथ पर
जाया करते समय
गप्पें करने, या,
चायें पीने में।

व्यथित हैं,
रोशनाइयों और क़लमों के फ़नकार,
ज़िन्दगी क्यों नहीं
फूलों का बिस्तर ?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

क्यों घट गयी हैं क़ीमतें—
शब्दों,
अर्थों,
बिम्बों की;
लोग रीझते क्यों नहीं, इन पर !

टूट गया है छन्दों का जादू,
स्वच्छन्दता बे असर !
लाख कोशिशों के बावजूद
बाक़ी
कहीं, कोई कसर।
बदल-सा गया है शहर।

नयी-नयी सड़कें,
मकानों का अम्बार।
ढूंढ़ना पुराना घर,
कठिन व्यापार।
नयेपन ने बना दिया है इसे
—अनजान !
मकान के सामने खड़े लोग
पूछते
'है कौन-सा मकान ?'
टूट चुकी है
फिर से बनानी होगी—पहचान।
अभी तो हाल यह

कि ये भी परेशान
वे भी परेशान।

8.1.84

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अविकसित देश के नागरिक

पूरे हो जाते जब वाक्य
अक्षर और शब्द
जैसे उनमें घुल जाते।

अधूरे वाक्यों के अक्षर और शब्द
अविकसित देश के नागरिक हैं
उनकी नदियाँ
उनके खेत नहीं सींचतीं,
न तो उपजती—
उनके झरनों से बिजली।

दुनिया,
एक ऐसी किताब
जिसका एक भी वाक्य पूरा नहीं।
इस किताब में कविताएँ ढूंढ़ना—
मृत सन्तान की लाश लिये
हकीमों के दरवाज़े घूमना।

अफ़सोस !
दवाएँ जिन्दगी को ठहरा तो सकतीं
लौटा नहीं सकतीं।
और दवाओं के जोर पर टिकी जिन्दगियाँ
किसी लोथ से ज्यादा
कुछ नहीं।

जीने की लालसा
यानी, उन्हीं-उन्हीं कामों को
दुहराने की लालसा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
कोई नयी ग़ज़ल
खिलावट की राह लगी
नहीं दिखती,
क्योंकि नहीं दिखता कोई शायर
गुनगुनाता।

हर आदमी
हवा के सरकने से
चौंक-चौंक जाता!

26.10.84

बुरी तरह शरमाते

मैंने धर्म से पूछा
तू हिन्दू है, या मुसलमान?

और पहाड़
रेत का ढेर हो गया।

सारे जीवन में
इस बुरी तरह शरमाते
मैंने किसी और को
नहीं देखा।

24.7.84

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विदेशो आवाजों से बेहतर

महर्षि वाल्मीकि के पूर्व
यदि नहीं थी कविता
तो
मेरे लिए
स्कूलों-कॉलेजों को बन्द कर दो।
और, जड़ दो ताले
पुस्तकालयों के दरवाज़ों पर।

कोई गहरा सम्पर्क है
कविता का जीवन से।
उसके लिए
मैं गहरे से जीऊँगा।

जितने भी स्वर देती
बाहरी दुनिया
वापस कर देता
शरीफ़ कुआँ
मैं
अपनी शराफ़त खोना
नहीं चाहता।
विदेशी आवाज़ों से
बेहतर है
अपने जल में
डूब जाना।

16.9.84

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कविताओं का इस्पात

मुझे नहीं है
और तुम्हें भी
नहीं होनी चाहिए
सम्पादकों से—
(जिन्हें न छपनेवाले
कवि और लेखक कहते
'मक्कार', 'वदज़ात'
और 'बेईमान')
—कोई शिकायत !

बड़ी दुनिया
इनकी घेरेबन्दियों से
रहती बाहर।
बमुश्किल अँट पाते ये
आप।

ये
जागे हुए स्वार्थवाले
बिललाये लोग हैं।
तुम अगर चाहो
तो हम चल सकते
उस दुनिया में
जहाँ
स्वार्थ
अभी उनींदा-उनींदा-सा है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

और
हमारे गीत
उसे ठण्डा कर सकते,
—एक ज़रूरी काम।

क्योंकि
जागते ही सबसे पहले
ये लगवायेंगे बोलियाँ
मोनालिसा की तस्वीर की।
वॉन गॉग के
काटेंगे कान।
डायनामाइट के पैसों से
कविताएँ ख़रीद लेंगे।

इन्तज़ार कर रही
बड़ी दुनिया;
इन घेरेबन्दियों में फँसने की
क्या ज़रूरत ?
मैं
तुम्हें विश्वास दिलाना चाहता
एक-एक पेड़
तुम्हारी कविता
सुन,
समझ,
और सराह सकता।
और
राउरकेला की भट्ठियों में
तुम्हारी कविताओं का
बनाया जा सकता
—इस्पात।
जब भी चलेगी कोई रेलगाड़ी,
उड़ेगा कोई विमान,
उसके सुर, ताल और लय पर
तुम्हारे गीतों की छाप होगी।

5.2.85

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पसीनों नहाये भारिये

बहुत लोग
क़ैद कर देना चाहते
शब्दों में बहुत-सी बातें।
मैं,
शब्दों को
भारिया बनाना चाहता।
मुझे
अच्छे लगते
लाल-पीली धोतियों में
पसीनों नहाये भारिये।
आकाशीय रूप हैं वे
सम्बन्धों के।

उन्हें थकना चाहिए
सुस्ताने को
किसी तड़ाग
या कूप पास—रुकना चाहिए
और चाहिए
आँकना
तय और बाक़ी दूरी का
हिसाब
होना चाहिए खुश
या हतोत्साह।
उनमें होनी चाहिए
बेर डूबने के पहले
गन्तव्य तक
पहुँचने की ललक।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कभी-कभी
टेंट में धरी
नर्म पड़ती चिट्ठी को
टटोलना चाहिए;

क्योंकि, उनमें भरा होता
सास
या माँ का प्यार
बहन का स्नेह
या ननद का दुलार।
नैहर का भारिया
ले जाता बाप का प्यार
पी के घरवाला
लाता बुलावा
पति का मनुहार।

मुझे भारिये अच्छे लगते।
लाल-पीली धोती में
दुल्की चाल चलते
पसीनों नहाये भारिये
अच्छे लगते।

11.5.85

ख़याल रखना !

अगर मैं
पागल हो गया।
ख़याल रखना।
यों—
पागल करना भी जानती है
नज़र तुम्हारी ही !

जन, 82

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एक हाथ करुणा का

अँधियारी रातों में छुपे सभी घर-दर,
सपनों के टुकड़ों से आसमाँ गया भर।

कहने को आये थे बहुतेरे साथी,
सीने पे था सवार दुःख का हाथी।

तिनके-से उड़कर सब बिखर गये।
समय की तेज़ रफ़्तार हवा में
जाने सब किधर गये।

एक हाथ करुणा का, किसका आया ?
अँजुरी भर फूलों से किसने नहलाया ?

सिहर गयी डाल-डाल, पत्ती भी डोली।
असमय में रंग उड़े खूब मची होली।

कटखनी कुतिया

शब्दों के सौदागर !
उन्मादों के गीतकार !
ज़िन्दगी,
कटखनी कुतिया है
छोड़ती नहीं
किसी को।

मई, 82

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सिहको सहसा

जैसे कोई फूल खिले
गन्ध उड़े
रंग बिखर जाये,
जैसे किसी पतली-सी शाख़ पर
नन्हीं-सी चिड़िया
चहचहाये और उड़ जाये,

नदी की धार पर
उठे कोई लहर
गुम हो जाये।
मेरे भीतर तुम
सिहको सहसा
और थम जाओ!

जुलाई, 82

पाल तान दिया

मैंने दोनों हाथ उठाये
तुमने उन्हें थाम लिया।
नदी में नाव उतार दी मैंने
तुमने
पाल तान दिया।

मई, 82

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चेग्वेवेरा

चेग्वेवेरा : एक नाम,
बरबस जो हाथ ले थाम।
कोरिया हो, या हो वियतनाम,
ग्वाटेमाला हो,
क्यूबा हो,
या हो सुरीनाम।
चेग्वेवेरा है,
आज़ादी के लिए
बिछ जाने का नाम।

एक उन्माद का नाम है
—चेग्वेवेरा।
यौवन के सपनों का नाम है
—चेग्वेवेरा।
चेग्वेवेरा है
आज़ादी की मशाल।
चेग्वेवेरा है
दलितों के भीतर का उबाल!

गूंगे कण्ठों की वाणी है,
पिसती मानवता की आँखों का
पानी है।
चेग्वेवेरा का
नहीं कोई सानी है।

शायद, कोई दहशत है
कैसी यह वहशत है?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पहाड़ों पर घूम रहे टैंक,
जंगलों से
पूछ रहीं पता बन्दूकें;
'कहाँ है चेग्वेवेरा ?'
'कहाँ है चेग्वेवेरा ?'

नहीं वह जंगलों में नहीं वह पहाड़ों में
चेग्वेवेरा है दिलों के उन्मादों में,
खून के बदले आज़ादी देने के वादों में।
नहीं रहा वह ख़ास बना आम
बरबस थाम ले जो हाथ
चेग्वेवेरा वह नाम

चेग्वेवेरा : एक नाम
बरबस जो
हाथ ले थाम !

25.5.83

कविताओं से कटेंगे

लोग
कविताओं का उपकार मानते
ख़ासकर
जीवन से जूझनेवाले।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तोड़ सकती हैं
कुछ कविताएँ
सहनशीलता का कड़ा ख़ोल
इससे निकला आदमी
आग का गोला
होता है
—विषमता और दुराचार पर
फट पड़ने वाला।

कुछ मन
चन्दन की सुवास जैसे होते हैं
कुछ कविताएँ
उनका गन्धभार
ढोती हैं।

गन्धभार ढो सकने वाली कविताएँ
हवा की तरह होती हैं—
कभी ठंडी,
कभी गर्म
और कभी नम।
दुर्गम
कोई स्थान नहीं
हवा के लिए।
और हवा
कुछ लोगों को अप्रिय लग सकती
क्योंकि चंचल है—
पर्दे हिला देनेवाली,
खुले पल्ले बजा देनेवाली।
और
हवा नटखट है
अपने कन्धों पर लदी धूल
किताबों पर झाड़
भाग खड़ी होनेवाली।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कुछ लोगों को
हवा
पसन्द नहीं आती।
ज़ाहिर है
ऐसे लोग
कविताओं से कटेंगे।

23.3.85

सूर्योदय में कोई चीज

पिंजड़े में वन्द तोता
जितनी बातें बोल सकता,
पेड़ों पर रहनेवाले तोते
नहीं बोल सकते।
मगर,
पिंजड़े का तोता
जो भी बोलेगा
दूसरे तोते
उसे समझ नहीं पायेंगे।

उपलब्धि कहो इसे
या कहो—समय ज़ाया करना
मर्ज़ी अपनी-अपनी
ख़याल अपना-अपना।

उगते सूरज की कोई भी तस्वीर,
सवेरा नहीं ला पायी है।
सूर्योदय में कोई चीज़ है
जो तस्वीरों में
नहीं उतर पायी है।

8.3.85

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दूर हो चुकी तुतलाहट

इसमें
कोई लाग-लपेट नहीं,
बात
सीधी और साफ़ है,
उस पहाड़ी जलाशय की तरह
देखे जा सकते
जिसके तल पर पड़े,
छोटे-बड़े
पत्थर के टुकड़े।

अब
सुविधाओं पर
नहीं लगाये जा सकते
पहरे।

उन्हें आज़ाद करानेवाले लोग
खून बहाने को तैयार हैं—
अपना
या
पहरे
बिठानेवालों का—
जब
जैसी होगी जरूरत।

बीते वर्षों में
आइसनहावरों की नहीं
बढ़ी है संख्या
चेग्वेवेराओं की,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मायकोव्स्कियों, नेरुदाओं की,
इक़बालों, जोशों, दिनकरों की,
नज़रुलों और ब्रेख्तों की।

दूर हो चुकी है
हक़ की तुतलाहट
किसी क़द्दावर शेर की तरह
चलने लगा है
मानवीय अधिकार!

अब कुछ उपाय नहीं
आयोजित करो बड़ा हाँका
या तराशो ढेर सारे अभियोग
रचो न्याय-नाटक

दो देशों को निकाल
धरती फिर भी बहुत पड़ी है!

14.10.85

आँसुओं की क़ीमत

पी लीजिये आँसू,
धरती बहुत गीली,
हवा नम है।
ग़रज़ यह
कि आँसुओं की क़ीमत
बहुत कम है।

26.6.83

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ख़बर देनेवाली कविता

वैज्ञानिक
जब लगा रहता,
भूख-प्यास भूल,
—नींद को बिसराये
किसी जोड़-घटाव
या गुणा-भाग में,

अथवा देखता,
अपने अन्वेषणों को लगा
आदमी की सेवा में—

कविता
निरन्तर अपने काम में लगी रहती—
मानिन्द आकाश!
जो ज़रा-सा
विचलित नहीं होता
सूर्य के उदय या अस्त से।

परमाणुबम गिराने की योजनाओं की
पहली ख़बर देनेवाली
कविता ही होती है

और वह भी
कविता ही होती
क्रन्दनों की
जो सहलाती पीठ
सान्त्वना के हाथों,
देती हिम्मत
कमर बाँध
विपत्तियों से लड़ने की।

16.10.85

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इससे भी बड़ी कोई

आँख में
आँसू का
डबडबा आना,
बूँदों में वदलना,
गालों पर टघर जाना;

कहना चाहते हों कुछ होंठ
मगर
बावजूद उनके हिलने के,
शब्दों का न वन पाना ...
कविता
क्या
इससे भी वड़ी कोई
होती है?

31.7.82

कुछ बीज गीतवाले

इस शोर की नदी में
वह द्वीप, चुप्प, उभरा
पानी उतर रहा है
धरती जनम रही है।

इस पीठ पर उगेंगे—
कुछ बीज गीतवाले,
हरियालियाँ हँसेंगी
दिन होंगे फूलवाले।

18.12.85

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वही वही है

ओ आसमाँ, ज़रा झुक
कुछ ख़ास कह रहा हूँ।
झोंका बना हुआ, ले,
इस बार बह रहा हूँ।

इस बार सरहदों की
चल पायेगी नहीं कुछ।
इस पार भी वही है
उस पार भी वही है।

18.12.85

जब राह ही नशीली

हर एक तमाशा है हर एक तमाशाई।
वह कौन जग रहा है? यह नींद किसको आयी?

आसान तो नहीं है इन्सान बन जियें क्या?
जब राह ही नशीली तब पाँव ही करें क्या?

गिर-गिर रहे हैं चल-चल
मजबूत पाँववाले।
मजबूतियाँ सभी से
जाने न कब, कभी से—
खिलवाड़ कर रही हैं।

18.12.85

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गति ज़रा कम

मज़दूर
जब जवान रहता
नसों में कड़कती हैं बिजलियाँ
पुट्ठों में
शक्ति का सागर
लहराता
मिहनत करने से
वह पीछे नहीं हटता
ज़रा-सी वाह-वाही पर
लुटाता श्रम
जैसे
किसी अमीर बाप का आवारा बेटा
पैसे लुटाता।

समय बीतते-बीतते
समुद्र सुस्त पड़ने लगता
और मज़दूर
मज़दूरी की कलाएँ सीखने लगता
कि जिससे
काम तो पूरा हो
पर
समुद्र सूखने की गति
ज़रा कम हो।
बूढ़ा मज़दूर
सूखा समुद्र होता है
तल के गबड़ों में बचे पानी से,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
जीवन का खेत
किसी तरह
सींच पाता।

तुम्हारी आँखें
नम नहीं होतीं क्या?

31.7.82

खाँसता-खाँसता दोहरा

मुझे नहीं मालूम
कि क्या हैं उनके नाम
जो, सीनों में उतरी गोलियों का जवाब
लहू के फ़व्वारों से दे रहे
—नमीबिया में।
मुझे नहीं मालूम
उसे क्या कहकर पुकारा जाता
जो, बारूद के धुएँ में
खाँसता-खाँसता
दोहरा हो रहा।

किलिमनजारो की चोटियाँ लाँघ
पार कर
अछोर समुद्र
एक इन्सानी कराह
पहुँच रही
मुझ तक।
मिल रही गले
गाँधी पर चली गोलियों की
आवाज़ से
और रोती जा रही लगातार!

22.8.85

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मरुस्थल बीच हरियाली

वही धरती कभी तपती
कभी हो सर्द उजली बर्फ़ से ढँकती
कभी सब्ज़ा, कभी धानी,
गुलाबी, और पीले, और नीले
रंग मनभाने।

मरुस्थल बीच हरियाली,
विजन में खदकता दलदल,
कड़कती दामिनी नभ में,
झमक कर टूटती शम्पा
नदी की चाल में कलकल।

22.8.85

दर्द के कतरे मिलाकर

उदासी के कलेजे में ज़रा-सा दर्द धरता हूँ।
नहीं मैं आह भरता हूँ नहीं मैं गीत गढ़ता हूँ।

छलक उट्ठीं अगर आँखें, सँजो नमकीन पानी को,
समन्दर में बदलने का, सिखाता राज़ मैं उनको।

उठी जो टीस सीने में खिली बन फूल होंठों पर।
तुम्हारे तीर भी थे खूब जो लौटे दुआ बनकर।

नहीं था बाँटने को, और कुछ, बस, एक खालीपन।
ख़ज़ाना लुट नहीं पाया यही बस इक उदासापन।

इसी में दर्द के क़तरे मिलाकर धुन बनाता हूँ।
नहीं मैं आह भरता हूँ नहीं मैं गीत गाता हूँ।

20.12.82

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

देखकर मँझधार को

बैठकर तन्हाइयों में गीत गाता हूँ।
क्या बुरा करता अगर मैं गुनगुनाता हूँ?

जोड़ता हूँ तार,
जो दिखता नहीं,
उस तार से।
खींच
कोई सन्दली रेखा,
हवा में,
मुस्कुराता हूँ।

क्या बुरा करता
अगर मैं गुनगुनाता हूँ?

छोड़कर यह शहर
यदि मैं गाँव में रहता,
गाँव से भी दूर
ठंडी छाँव में रहता।
चाँदनी से,
रात में,
मैं बात करता हूँ।
क्या बुरा करता
अगर मैं गुनगुनाता हूँ?

जोड़कर रिश्ता हवा से
पाल बन जाता।
इक् भटकती नाव को मैं
पार ले जाता।
देखकर मँझधार को मैं
कसमसाता हूँ।
क्या बुरा करता
अगर मैं गुनगुनाता हूँ?

13.12.82

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गद्गद···यह गान

पता नहीं
इन पगडंडियों पर लौटना
होगा कि नहीं।
पता नहीं
इन मेड़ों पर
दुवारा चल पाऊँगा
कि नहीं।
मेड़ों से सटे
धान के ये खेत
जिन्होंने
हरे नृत्य से
मुझे आनन्दित किया।
पगडंडी की वग़ल खड़े
तरह-तरह के पेड़,
लताएँ, गुल्म और झाड़ियाँ
इन्होंने
मेरी यात्रा को
छाँह दी
सुगन्ध दिया।
इनमें चरते मेमनों और भेड़ों की चौकड़ियाँ
प्राकृतिक निस्तब्धता भंग कर
उनका 'में-में' कर मिमियाना
कैसे
भूल पाऊँगा?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गायों के गले बँधी घंटियों की 'टुन-टुन'
और
रँभाते बछड़ों की 'बाँ ऽ बाँ ऽ…'
मेरे भीतर
पत्थर की लिखावट हो गयी है।
पता नहीं
इन मेड़ों-पगडंडियों पर
वापस हो सकूँगा
कि नहीं।
राहों ने
जो इतना स्वागत किया है
दिया है
बेहद सम्मान
इसके बदले दे क्या सकता
सिर्फ़ हर्ष के कुछ आँसू
गद्‌गद,
भर्राये स्वर में
यह गान।

26.8.82

कैसे कर पाते होंगे प्यार

वह लोग
जिनके दरवाज़े से
लौट आतीं सुगन्धें
जैसे—कोई कवि
और उन्हें
ज़रा नहीं आता
अफ़सोस
मैं समझ नहीं पाता
कैसे वे
कर पाते होंगे प्यार
अपने बच्चों को!

19.12.85

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अपने सारे प्रश्न ठुनकते

सारी दुनिया सो जाती है जगते केवल स्वप्न
जैसे बीजों में सोये हों पेड़।

बहुत देर से सुला रहा मैं
थपकी दे-दे गाकर लोरी
अपने सारे प्रश्न
मगर ठुनकते,
हाथ मारते,
पाँव मारते,
मना रहे वे जश्न
वेला हुई अबेर
सारी दुनिया सो जाती है जगते केवल स्वप्न
जैसे बीजों में सोये हों पेड़।

19.12.85

डाल तक आने से रोक

दरवाज़े पर खड़े लोग
ऊँचे स्वर में बतिया रहे हैं।

मैं सोना चाहता हूँ
मगर,
ये मुझे सोने देंगे नहीं।

इनके ठहाकों का वज्र-निनाद
नींद की परतें तोड़ देता है।

ऊपर से उतरती चिड़िया को
डाल तक आने से
रोक देता है।

मई, 82

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अधिकार नहीं होता

कुछ चीज़ें
लॉकरों में नहीं रखी जा सकतीं,
न तो
डायरियों में
दर्ज की जा सकतीं।

ऐसी चीज़ों की जगह
कविताएँ हैं
या
काग़ज़
या दीवारों पर
उगाये
या खोदे गये चित्र।

एक ताजमहल है
जो
कविता है
और नहीं भी।
ताजमहल
जब-जब
इतिहास के पन्नों पर उगता है
कविता नहीं रहता।
और वही ताजमहल
जब आगरा क़िले के
किसी स्तम्भ पर जड़े
नन्हें शीशे में
प्रतिबिम्बित होता
एक पूरी कविता बन जाता!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आदमी
जब सौन्दर्यपूर्ण हो जाता
घटना के नीचे पड़ी लाल रेखा
कविता की होती है।

और सौन्दर्य?
अमराइयों की ज़मीनदारी नहीं।

सौन्दर्य पर
सुन्दर-से-सुन्दर चीज़ों का
अधिकार नहीं होता।

पश्चात्ताप,
क्षमा से कम सुन्दर नहीं।
न तो असुन्दर है,
बलात्कारी
लहू नहायी तलवार!

15.12.85

कितनी गर्मजोशी

बहुत ज्यादा नहीं
चावल से भात की दूरी
मगर, सही - सलामत पहुँचना
कितनी गर्मजोशी माँगता है?

25.6.85

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उत्तर सिर्फ चुप

लोग
तुम्हारा पता
पूछते हैं—मुझसे।
मुझसे लोग तुम्हारा पता पूछते हैं,
मगर, मैं उन्हें क्या बताऊँ?
जब भी मिलता हूँ
तुम्हारा पता पूछने की सुध नहीं रहती।
मैं लोगों को क्या बताऊँ?
सपनों की बातें
उन्हें क्या समझाऊँ?

गर्मी के दिनों में
ठंडी छाँह पसारे कोई वृक्ष,
या, शीतल जल का उपहार लिये
कोई कुआँ।

आसमान में उड़ते परिन्दे
आसमान का पता क्या बतायें?
सागर की मछलियाँ,
कहाँ है सागर—
क्या बतायें?

तर्कों और प्रश्नों से
पिटाई करते रहो।
उत्तर
सिर्फ़ चुप है।
सिर्फ़ चुप !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नक्षत्रों के हुक्म पर

कई-कई टोलों मुहल्लों में बँटा है शहर
लोगों के ज़ेह्न में पूरा-का-पूरा अँटा है शहर।
जच्चालय है,
औषधालय है,
चिकित्सालय है,
विद्यालय है,
कई-एक दफ़्तरों से
भरा है शहर
कई-कई टोलों, मुहल्लों में बँटा है शहर

मुहल्ला यह अमीरों का,
वह है ग़रीबों का।
वहाँ — वह अफ़सरों का,
आगेवाला बाबुओं का।
इसे कहते हैं भंगियों का,
बाज़ू में रंडियों का।
बहुधन्धियों से भरा है शहर
कई-कई टोलों-मुहल्लों में बँटा है शहर।

कुछ घरों में मन्दिर है
कुछ मन्दिरों में घर हैं
देश भर में
इस शहर-से
कई शहर हैं!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मगर,
और शहरों से क्या लेना-देना ?
मरने को काफ़ी है
एक यही शहर।
चुना नहीं है
हमने इसे शौक़ से।
वह तो
जन्म साथ ज्योतिषियों ने गुना है
नक्षत्रों के हुक्म पर
चलता है शहर
कई-कई टोलों-मुहल्लों में
बँटा है शहर।

29.5.83

कि जैसे क्षोभ से भरता

घने कुहरे-भरा आकाश मन का
जब कभी होता कि बाहर से
कँटीले तार के
कसते
कई बन्धन।

उबलकर
खौलकर मन-सर
जगाता है हमें सत्वर।

लघुत्तम-भारवाले कण-प्रहारों से
कई हलचल भरे परमाणु में लरजन
कि कोई नील ऊर्जा खोजती
नभ में विकट नर्त्तन,
किरण की पीठ पर आसीन हो
निर्बाध-गति-विचरण।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वही ऊर्जा
अभी जो है रखे
परमाणु को ज़िन्दा
छिटककर चाहती उड़ना
नये परमाणु को गढ़ना।

धरा का, पर, विपुल कर्षण
बचाता है व्यवस्थाएँ
अनागत
कल्पना के गेह में
विश्राम करता-सा।

कि नभ में सूर्य
जैसे लोल लपटों बीच है नचता
कि ऊर्जा में विसर्जित अनवरत
स्वयमेव को करता
कि पड़ता बाँटना खुद को
नया कुछ भी बनाने हित।
मगर यह बाँटने का काम
सुधियों से नहीं होता।

महत्तम ताप से होता
प्रबलतम वेग से होता।

कि सारे सोचने के क्रम
बिखरते हैं जहाँ जिस क्षण
वहीं खिलता कमल नीला
वहीं का वारि है पीला।
कि जैसे चुम्बकी-विद्युत्-तरंगें
अक्स बनती हैं
कि बजती हैं किसी सुर में
अनोखे शब्द बनती हैं।
किसी एकान्त से फेंकी गयी
ऊर्जा तरंगें हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कि नभ में मेघ जो घिरते,
पवन-स्कन्ध पर उड़ते,
सघन संघर्ष से भरते,
कि जैसे क्षोभ से भरता
हमारा मन
अभावों को वहन करते।

तड़ित अंगड़ाइयाँ लेती
कड़क, उत्कण्ठ हो उठती
हवन करते स्वयं को घन
कि जैसे चक्रवातों में।

4.8.85

खरा सोना बचाने को

इधर भी देखिये कुछ है
उधर भी देखिये कुछ है।
इधर जो है उधर भी है,
उधर जो है इधर भी है।

इधर कुछ है
उधर कुछ है
इधर भी देखिये—
कुछ है।

इधर इन्साँ उधर इन्साँ
इधर आहें उधर पायल
इधर औरत उधर औरत
इधर आँचल उधर झालर।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इधर पर्वत उधर पर्वत
इधर हैं फूटनेवाले !
इधर सागर उधर सागर
उधर हैं सूखनेवाले।

इधर का देवता तकता
बिखरना स्वप्न का प्रतिपल
उधर का देवता मशगूल
फ़ैशन के नज़ारों में।

इधर मिट्टी उधर मिट्टी
इधर क्यों फूल उगते हैं ?
कि जिनको तोड़कर
उस पार,
पत्थर पर चढ़ाते हैं।

उधर से जब मिली सौग़ात
कांटों से रही सज्जित।
इधर का हाथ जब चीख़ा
उधर कोई नहीं लज्जित

इधर इक् आग भड़की है
खरा सोना बचाने को
उधर के ज़ेवरों में आग की दहशत
समायी है।

7.8.85

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गह्वर में कुछ

कुछ पन्ना कुछ हीरा जैसा
जीवन कुछ-कुछ पीड़ा जैसा।

कुछ गेहूँ में लगीं बालियाँ
कुछ बीजों के बन्द रहे मुँह
पन्ने कुछ के खुले
किताबें ज़्यादातर तो मुँदी रह गयीं।

घूंघट - घूंघट घेरे - घेरे
किसको उठाये किसको छेड़े!

कितने देखे सौ अनदेखे।
देखे - दाखे सब अनदेखे।
लहरें ऊँचा-ऊँचा उठ-उठ
सागर का हैं पता बतातीं
तूफ़ानों के ज़रिये कहतीं
'हवा—रुको, मैं भी हूँ आती।'

सुना - सुनाया खो जाता है
दिखा-दिखाया खो जाता है
रह जाता है खालीपन भर
सूनी आँखें सूना-सा मन।

हीरा पत्थर पन्ना पत्थर
पीड़ा पैठी मन के गह्वर
गह्वर में कुछ हलचल जैसा
जीवन कुछ-कुछ पीड़ा जैसा।

15.1.85

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आँका सूरज, बाँका सूरज

इक् सूरज जो उगता सूरज
इक् सूरज जो ढलता सूरज
कुछ सूरज
बादल के पीछे
मध्य गगन पर दिपता सूरज
किसकी बातें भला बताऊँ?
किसकी चर्चा गुम कर जाऊँ?

आँका सूरज
बाँका सूरज
धान पकानेवाला सूरज नाच पलक पर
दूर झलककर
नींद उड़ानेवाला सूरज
फटे मेघ से झाँक - झाँककर
धुन्द व्यूह को चाक - चाककर
जगमग करनेवाला सूरज
किसकी बातें भला बताऊँ?
किसकी चर्चा गुम कर जाऊँ!

प्राची को रक्तिम जो करता पश्चिम को भी लाल बनाता

दो लाली के बीच दिवस भर
स्वर्णिम-पीला रहनेवाला
उगनेवाला ढलनेवाला
जलनेवाला बुझनेवाला
बादल को बहकानेवाला
धरती को तड़पानेवाला
किसकी बातें भला बताऊँ?
किसकी चर्चा गुम कर जाऊँ!

13.10.85

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चित्त पड़े तिलचट्टों की नगरी में

बजाय पोस्ट करने के
मेरे नाम लिखी
माँ की चिट्ठियाँ,
कुटिया में धरे लघु भाँड में धर
निश्चिन्त होनेवाले दादाजी
नहीं रहे।

घर के संवाद
डालते
पढ़ाई में ख़लल
—इस समझवाले दादाजी
नहीं रहे,
नहीं रहीं माँ।

अब
सारा काम
मुझे ही करना पड़ता।

चिट्ठियाँ लिखना
उन्हें भाँड में धरना
और एक दिन
उन्हें पड़ा देख
उदास होना···
टूटा नहीं
सिलसिला।

जारी है
मेरी पढ़ाई,
अव्वल होने की डिग्रियाँ बटोरना
और फिर
उन्हें बेच देना
कभी फ्रिज

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तो कभी घर
कभी होटल
तो कभी सफ़र
के बदले।

यह क़िस्सा
जब मैंने अपनी पत्नी से कहा
वह इसका अर्थ पूछने लगीं।

यह क़िस्सा
जब मैंने अपने बेटे से कहा
उसने होंठ बिचकाये।

और यह क़िस्सा
जब मैंने अपने मित्र से कहा
'हो-हो' कर वह हँसा।

और मेरे भाई
और मेरी बहनें
जिनके पत्र
इसी तरह
पोस्ट होने से रह गये थे
जब मैंने उनसे यह क़िस्सा सुनाया
लगा
जैसे वह नींद से जागने की कोशिशें कर रहे हों।
या कि
चित्त पड़ा तिलचट्टा
फड़फड़ाये अपने पंख
सीधा होने को।
चित्त पड़े तिलचट्टों की नगरी में
मैं हवा बन गया हूँ,
उनकी छटपटाती टाँगों
फड़फड़ाते पंखों से पीटा जाता—
अनवरत।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मैं उनके लिए कुछ नहीं कर सकता
कुछ नहीं कर सकता
सिवा इसके
कि जब भी
उनके फेफड़ों से उठे
प्राण-वायु की माँग,
मैं उसे पूरा करूँ!

4.11.84

हँसे खिवैया ताके नैया

चलते - चलते मिली तलैया
एक थी नैया, एक खिवैया।

गहरा पानी नील तलैया
बरगद भैया पीपल भैया

चल रे पछुवा,
उठ पुरवैया

नील तलैया एक खिवैया

नील तलैया के पानी में
मछली-मछली
नीली मछली पीली मछली
रंग-बिरंगी छप-छप मछली
हँसे खिवैया
ताके नैया
चलते - चलते मिली तलैया
एक थी नैया एक खिवैया।

19.3.85

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आसमान के टुकड़े पसन्द नहीं

तूफ़ान
किसी कमरे में बन्द रहे
यह उसकी शान के ख़िलाफ़ है।
तूफ़ान तो उठते हैं
कमरों की मौत बन।

तूफ़ान का बार-बार उठना
सबूत है
इस बात का
कि आसमान के टुकड़े करना
कहीं
पसन्द नहीं किया जा रहा।
चलो
हम चलते वहाँ
जहाँ से तूफ़ान
उठते हैं।

25.2.85

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बिजलियाँ सोख सकें

बच्चों की शिकायतें सुनने में
बड़ा लगता मेरा मन।
कपूर-सी उड़ जानेवाली
ये शिकायतें जब
बड़ी आवाज़ के लिए तैयार हो रहे कण्ठों से निकलतीं
इनके घावों से
पोंछती रहती रक्त मासूमियत
और ताज़ा गुलाब-से होंठ
सहलाते रहते दुखती रगें।

मगर, ये आपसी बातें हैं।
इतना ही निश्चिन्त
मैं उस समय नहीं रहता
जब बच्चे के पीछे पड़ा रहता
कोई कुत्ता
या, कोई साँप
उसे डँसने को दिखता तत्पर,
बच्चे तो होते ही धरोहर।

उनके लिए
हमें ऊँचा घर बनाना है
जिसकी नींव भूकम्प झेल सके।
और गुम्बदों पर टूटें यदि बिजलियाँ
हमारा इन्तज़ाम
उन्हें सोख सके।

13.10.85

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तू न रही तू

तू दुनिया नहीं
हवा का झोंका थी
कैसी
दैवी सुगन्ध से भरी-भरी !

आज जब तू नहीं है,
तेरी कमी
तेरे गुणों का बखान करती है।

वे पत्थर-दिल इन्सान
—कि अँधेरे की सन्तान
दबे-दबे-से
कहते—
"औरत,
वह औरत नहीं थी,
कुछ और थी—
शायद माँ !"

□

मैंने देखा था
लोगों को
शूल चुभोते
तुम्हें
तड़पते
और उन्हें
ठठाते।

मगर,
तुम्हारे तड़पने में
देवताओं का नृत्य था।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कोई तेज
समेटता चला गया तुम्हें
अपने वर्तुल में
दिनानुदिन
और
जीवन के अन्तिम दिनों में, यद्यपि,
तुम्हारा शरीर झुलस गया था—
पूरा हो चुका था अन्तःमन्दिर
देवता हो चुके थे पीठासीन

तू न रही थी तू
कोई भजन
कोई कीर्त्तन हो गयी थी।

मई, 82

कभी नहीं रुकती

नदी बहती जा रही थी।
उठ रही थीं तरंगें,
गिर रही थीं।
···और नदी,
बहती जा रही थी।

कहीं,
किसी पहाड़ से टकराती,
तट के किसी पेड़ से,
बतियाती,
ग्रामीणों को नहलाती,
शहर की गन्दगी बहाती,
···नदी बहती जा रही थी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भरी दोपहरी में,
तट की किसी मठिया पर,
पुरवैया की सहलाहट से अलसाया,
सोया था कोई गँवई।

रह-रहकर कुर्राता था
पड़ोस की नीम पर बैठा कौआ।

सब
देखती-सुनती,
...नदी बहती जा रही थी।
बहती जा रही थी।

गाँव के पूरब,
श्मशान घाट पर,
माँ की लाश लिये,
जब मैं पहुँचा था,
ज़रा-सा भी तो,
नहीं चौंकी थी नदी,
ज़रा-भी, नहीं हुई थी उदास।

कातिक की शर्मीली साँझ में,
नयी साड़ियों में लिपटी
ललनाएँ,
माथे पर प्रसाद का दौरा उठाये
युवक और प्रौढ़,
और किलकते बच्चे,
जब पहुँचते थे नदी किनारे,
नदी
तब भी नहीं थमती थी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अस्ताचलगामी सूर्य को
अर्घ्य चढ़ाती बरतिनें
देखती
कुछ देर को जनमे
कलरव को सुनती
···बहती रहती थी नदी।

नदी
कभी नहीं रुकती,
उठती-गिरती तरंगों-साथ
बहती ही रहती।
बहती ही रहती।
नदी

मई, 82

जीने को रोता

"मैं
तुम्हारी सारी व्यथा
सारी थकान हर लूंगा।
मैं तुम्हें
फिर से ताज़ा कर दूंगा—"
कहता था
गाँव के 'पुबारी कोन'वाला
तालाब।
जिन पर
हम धूम मचाते थे
तालाब के वे भिण्डे
ढह गये हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तालाब
तालाब नहीं रहा
बड़ा गबड़ा हो गया है।
मगर,
बदस्तूर
पुकारा जाता वह
आज भी
'तालाब' के नाम से।

किनारे खड़ा
कटहल का पेड़
आज भी खड़ा है,
मगर घट गयी है,
मिट्टी पर से
उसकी जड़ों की गिरफ़्त।

पेड़ मरा नहीं है
जिये जा रहा है।

माँएँ
अब बच्चों को
तालाब पर जाने नहीं देतीं।
क्योंकि
कहते हैं
ढहे हुए भिण्डों में
बाँबियाँ हैं
जिनमें बसते
ज़हरीले नाग
और यह भी
कि कटहल का वह पुराना पेड़
भुतहा हो गया है।
बसने लगा है उस पर
कोई ब्रह्मराक्षस।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बूढ़ा पेड़
अपने भाग्य पर रोता है
और बिसूरता है तालाब।
न तो कटहल की डालों पर
चढ़ते बच्चे
न तालाब में नहाता
कोई आदमी।

तालाब
बूढ़ा इन्सान बन गया है,
बूढ़ा इन्सान
निरुपयोगी
थका हुआ तन ढोता
अनेक उपालम्भों
अनेक उपहासों बीच
जीने को रोता।

21.7.82

स्थिर रहे पत्ता

नहीं होता आसान
तलवार की धार पर पाँव जमाना।
बहुत मुश्किल - सा काम
एक लक्ष्य पर चित्त को टिकाना।
हवा बहे और स्थिर रहे पत्ता
नाचे नहीं प्रकाश
हल्के-से झोंके पर,
जरा मुश्किल है।

जून, 82

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कंगूरे गिरना स्वाभाविक

बादल के नभ पर उठने से
तृषित धरा का हर्षित होना
—स्वाभाविक है,
स्वागत में
कुछ धन्यवाद का
पुट भरना भी
—स्वाभाविक है।

मेघ मगर
केवल छाया का
सुख भर देकर
लौट क्षितिज की ओर जायें
धरती को तजकर,
धरती
लेकर ताप सूर्य का,
पवन-रन्ध्र में
गर्म उसाँसें
भर देती है,
निर्मित करती
चक्रवात में केन्द्र
शून्य का
भुनगों-सा
बादल को
जिसमें गिरना पड़ता
धरती का आवेशित होना
—स्वभाविक है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
स्वाभाविक है नहीं
बादलों का छल करना
वर्षा का आमन्त्रण भर कर
नहीं बरसना,

धरती का चुपचाप सभी कुछ सहते जाना
विलख-विलख कर व्यथा-कथाएँ
कहते फिरना
—नादानी है।

छली, प्रपंची, शोषक को
दण्डित करने में
हिचक दिखाना
निज सत्ता को भूल
कँहरना
रोना-गाना —नादानी है।

ज्वालामुखियों का मुँह खुलना
भूचालों से
गाँव नगर का मिट्टी मिलना
—स्वाभाविक है।

दमन-दलन की नीति
उसाँसों से
आहों से
ज्वालामुखियों के अन्तः को
वज़नी करती,

रोज़
भीतरी दाब
और ताक़तवर होता।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

फोड़ एक दिन सतह
दाब 'लावा' बन बहता
पी जाती यह लाल आग .
सारी हरियाली।

मगर
ऊपरी हरियाली का
जल-जल जाना
—स्वाभाविक है।

झोंपड़ियों के
अट्टहास से
महलों के
कंगूरे गिरना
—स्वाभाविक है।

17.7.85

फिर ऐसा हुआ

मैंने
आम का एक पौधा लगाया।
उसकी जड़ों ने
मिट्टी में
जब अपने को फैलाया;
नयी डालों,
नये पत्तों से
पेड़ सजने लगा।

एक दिन,
जब मैं, उसे
सींच रहा था,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वह झुका,
मेरे कानों में फुसफुसाया
—'मैं तुम्हें
मीठे फल खिलाऊँगा।'

मैंने
एक गुलाब भी लगाया।
उसकी जड़ों पर
मिट्टी चढ़ायी।
पानी पटाया।

वह
तेज़ी से बढ़ने लगा।
और
एक जाड़े की भोर
अपने गीले होंठ थिरकाते हुए उस
ने बताया—
'शाख़ों को फूलों से सजा
मैं तुम्हारा मन हर लूंगा।'

फिर ऐसा हुआ
कि, एक दिन मैं मर गया
उस दिन
आम का पेड़ उदास था
क्योंकि उस पर आ गये थे मंजर

और गुलाब भी
खूब रोया था
कि उसकी डाल पर
पहली बार
आँखें खोलने को को थीं
कलियाँ।

मई, 82

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

देखभाल का भार

कितनी अजीब बात है
कि बाज़ारों में
जब तुम ख़रीदते होते
—कोई स्वेटर या शाल,
कोट या कम्बल,
तुम्हें याद तक नहीं आती—
कि ध्रुव प्रदेश भी है
यहीं
इसी भूमि पर
जहाँ बर्फ़ ही बर्फ़ है
और उस भयानक ठण्ड में
रहते कुछ लोग—
एस्कीमो।

बर्फ़ से बचने को
वे बनाते
बर्फ़ ही के घर : इग्लू।
विशाल सफ़ेद भालुओं से लड़ बच लेते
हड्डी के हथियारों पर
भरोसा कर।

उन्हें पता नहीं
कि उन्हीं की जाति
न्यूयार्क, मास्को,
लन्दन, पेरिस
और दिल्ली में बसती है।
और कितना आराम है
इन शहरों में,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जीने की कितनी सारी सुविधाएँ
जुटा ली हैं
मनुष्य जाति ने।

उन्हें कुछ नहीं मालूम।

और सच में—
कितनी अजीब बात है
कि तुम्हें उनकी याद तक नहीं आती।

नहीं उमड़ता
तुम्हारे भीतर
उनके लिए प्रेम।

उनसे मिलने को
तुम क़तई नहीं होते
—बेचैन।

मैं कहूँ, एक बात?
तुम हदें तोड़ डालो
मेड़ें हटाओ
सरहदों को दूर करो।

थोड़ा फैलो
हवा-से
प्रकाश-से हो लो।

सुदूर ध्रुव प्रदेश में
लोग जो रहते हैं
सुना है
अतिथियों से
बड़े प्रेम से मिलते हैं।
कहीं जो तुम्हारा प्रश्न हुआ
'अमुक बच्चे का पिता कौन?'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उत्तर तुम्हें चौंकायेगा।
जल्दी तो
समझ में नहीं आयेगा।
क्योंकि
बच्चे का पिता
विनयपूर्वक बोलेगा
—'इसकी देखभाल का भार
मुझ पर है।'

31.12.83

एक को चुनना, क्यों ?

मैं चिड़ियों की बोली इकट्ठा करता
जैसे कुछ लोग इकट्ठा करते
उनके पर।
मैं उनकी बोली के समुद्र का
पहाड़ बनना चाहता
ताकि
ये बोलियाँ
आकाश के स्पर्श से
मुझे बचा सकें।

आकाश और समुद्र में से
एक को चुनना
क्यों है ज़रूरी ?
नहीं जानता।

मैं चिड़ियों की बोली इकट्ठा करता
कुछ लोग इकट्ठा करते
उनके पर।

4.7.85

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बचपन को भानेवाला

दुनिया बहुत सुन्दर थी
जब मैं बच्चा था।
समय-ही-समय था
खेलने को।
दोस्तों की
नहीं थी कमी।
वर्षा का पानी नहीं डराता था,
न तो गर्मी की धूप थी
सताती।

बीमार होने पर,
नहीं घेरता था मृत्यु का भय,
माँ-बाप की चिन्तातुर आँखों में झाँक,
कौतुक
ज़रूर होता था।

भागते समय के साथ
विकसित होती रही देह,
भावों,
संवेगों
और इच्छाओं की
जनमती रही नयी पौध
भीतर।
सघन होता रहा
वह जंगल।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जंगल में
होता था
कोई एक चबूतरा,
जो मेरे बचपन को
बहुत भाता था,

अकेले में
कितने क्षण
वह वहाँ बिताता था !

छुपता गया वह चबूतरा
इर्द-गिर्द उगी लताओं से
वृक्षों से
झाड़ियों से।

उलझने लगा मैं
हरियाली से,
फूलों लदी डाली से।

और फिर एक दिन
पीली पड़ गयी हरियाली

सूख-सूख झ
ड़
गयीं
लहलहाती पत्तियाँ।

काली, खुरदरी बाँहें प सा रे
बच गये
ठूँठ,
रस्सियों-सी
पत्रहीन बेलें।

यह पहली पतझड़ थी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वसन्त फिर आया
नयी पत्तियों में
हरियाली का साम्राज्य
फिर छाया।
थक-सा गया हूँ
पतझड़-वसन्त भोग-भोग।

लाठी टेकता
आ रहा है कोई आदमी।
धीरे - धीरे।
टिकी है जिसकी दृष्टि
जंगल के उसी कोने पर
जहाँ होता था कभी
यह चबूतरा
मेरे बचपन को भानेवाला!

जुलाई, 82

लौट जायेगा

जंगल शहर आया है।

सुन नहीं सकते लोग
पत्तों को झमोड़
बहती हवा का संगीत
न तो देख सकते
उन्मादपूर्ण नृत्य।
अट्टहास जंगल का
लोगों को थर्राता है
क़ैद, बन्द पड़े वे
घरों में।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जंगल शहर आया है
लाया है नदियों का हास
पत्तों का विलास
लाया है !
शेरों की डौंक
फुदकन ख़रगोश की,
हिरण की तेज़ रफ़्तार साथ
लाया है !

जंगल शहर में आया है
घबरा गया है शहर
थर-थर थराया है !
थक जायेगा जंगल साँझ तक,
कोलतारी सड़कों पर
चलते - च ल ते ।

उदास हो जायेगा निर्जन नगर में घूमते - घूमते ।

जंगल लौट जायेगा
हरियाली का दोना लिये हाथों में,
मौन,
थका-थका
सर को झुकाये ।
शहर से दूर,
दूर लोगों से
खेतों से दूर
दूर गाँवों से,
जंगल लौट जायेगा
लौट जायेगा जंगल !

28.7.82

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तुम होते हो

कुछ गाता मैं अपने कारण
कुछ के कारण तुम होते हो।
आँसू तो मेरे होते, पर,
—रोनेवाले तुम होते हो।

फ़सल काटने मैं जाता हूँ
पहले बीज तुम्हीं बोते हो।
जो पाता मैं चीज़ अचानक
कभी उसे तुम ही खोते हो।

मैं,
सड़कों पर नज़र गड़ाये
चलनेवाला
सुख-दुःख के बिछुआ-पायल को
चुननेवाला
चुननेवाला, सुननेवाला, गुननेवाला
—मैं होता हूँ
बिछुओं के, पायल के मालिक
—तुम होते हो।

उठते जो घनखण्ड
तुम्हारे भीतर नभ में
या होते उड्डीन प्रभंजन
जो तव स्वर में
मैं देता आधार
बरसने का
उन घन को।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

और प्रभंजन को देता आकाश
कि खुलकर नाच सकें वे।

मुझमें वर्षा और प्रभंजन
भरनेवाले तुम होते हो।
मेरे कर में धनुष और शर
देनेवाले तुम होते हो।

मैं
केवल आकाश
खचित नक्षत्रों से तो
तुम करते हो।
मैं
केवल आकाश
धनुष सतरंगे बनकर
तुम उगते हो।

कुछ गाता
मैं अपने कारण
कुछ के कारण
तुम होते हो।

25.2.85

चिटकता हुआ ; शीशे का

अगरचे जरूरी हो गया है,
जला देना सब कुछ,
मैं
अपनी नदियाँ
रेत में छिपा लूँगा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इन्सान राख पर नहीं जी सकता
और नदियाँ
राख को हरियाली में बदलती हैं।
हरियाली में बदलती हैं?
यानी, राख को
जीने के क़ाबिल बनाती हैं।

मैं, तुम्हारे साथ ग़द्दारी नहीं करूँगा;
मैं अपने साथ ग़द्दारी नहीं करूँगा।
ज़रूर
मैं नदियों को छिपा लूंगा!
क्योंकि
राख नहीं,
तुम्हारी नियति है
—हरियाली।
मैं तुम्हें तुम्हारी नियति दूंगा!

ओह!
तुम अन्दाज़ नहीं कर सकते
उस गुदगुदी का,
जो उठा रहा है
भविष्य — मेरे भीतर!
और तुम,
अन्दाज़ नहीं कर सकते
मुझमें बहती पीड़ाओं का!
क्योंकि तुम नहीं बन सकते
गर्म चाय पड़ने से
चिटकता हुआ,
शीशे का—गिलास!

22.2.84

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एक सवाल पैदा होता है

कड़ी से कड़ी
मिहनत के एवज़
भरपेट रोटी का पारिश्रमिक
वैसा बुरा नहीं;
बुरा है छिनना
श्रम-विमुक्त पलों की
स्वतन्त्रता।
बुरे हैं वे क्षण
उठाते नहीं बनता
जिनका बोझ,
बिताये नहीं बीतते जो...।

एक सवाल पैदा होता है
जब एक ही उम्र के
दो बच्चों में से एक
रज़ाई में दुबका
करता याद
स्कूल का पाठ
और दूसरा
फ़ुटपाथ पर तापता
जलाकर—टायर
या
चाय की दूकान के बाहर जलते
चूल्हे के पास खड़ा
निहारता
चाय पीनेवालों के मुँह
—सुनता :
उनके दुक्खम-सुक्खम,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

या—
गप्पें,
जो होनी चाहियें,
इस उम्र की आँख-कान
बचाकर।

एक सवाल पैदा होता है
जब क़ीमती क़ालीनों पर चलते
होती सकुचाहट
कुछ पाँवों को।

या,
दवाई ख़रीदने में अक्षम
कोई प्राण
निराशा में डूब
छोड़ता शरीर।

जब नये हाथ
क़लम या तूलिका उठाने के बजाय
उठाते गँड़ासे
गोलियाँ और तमंचे।

जब कौमार्य और अस्मत
बोलियाँ लगवाने
चउतरे पर खड़े होते।

एक भी सर
नहीं दीखता
झुका,
एक भी आँख
नहीं दीखती नम।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तब,
एक सवाल पैदा होता।

एक सवाल पैदा होगा
कि बड़ी
कड़ी मिहनत के बदले
छोटा पारिश्रमिक…
कहाँ तक सही
या ग़लत है?
आदमी के हाथ में बन्दूक़
आँखों में खून
कहाँ तक सही
या ग़लत है?
अन्धे पाँवों तले
रुँद जाते
लॉन में लगे फूल,
रुँदता ड:लिया
या गुलाब
रुँद जाती
हरी, प्यारी दूब।
तो
ज़िम्मेदारी किस पर?
उस पर
जो मात्र कुछ रोटी से
सन्तुष्ट हो जाता।
या, उस पर
जो रोटियों के बदले
ख़रीदता अस्मतें?

विनाश का ज़िम्मेदार कौन?
पहाड़ियों में बसा वह गाँव
जिसके आधे ने
रेलगाड़ी चढ़ना तो दूर
उसे देखा तक नहीं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

या वह
जो जम्बो जेटों में
उड़ता फिरता?

कहीं-न-कहीं
ज़मीन
पूरी-की-पूरी
जुड़ी है।
समुद्र सतह को भले काट सकें
निचले तल पर
धरती
मुसल्लम है।

सुविधाओं की ईजाद कोई करे
ईजादों पर
पूरी इन्सानियत का हक़ है।

मगर,
इन्सानों का वह टुकड़ा
जिसने अन्वेषक भुनाये हैं
ऐसा नहीं चाहता
ऐसा नहीं चाहेगा
—जबकि इन्सानों का एक बड़ा भाग
ज़्यादतियाँ सहता आया है।

और यदि
यह सही है
कि काँटे से काँटा निकलता
तो युद्ध के अन्त को
पड़ेगा युद्ध में उतरना
सहनेवाले लोगों को
अश्रुपूरित नयनों-साथ सही
होगा
हथियार उठाना।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बातें — ये अथाही हैं
और
सँभलने को तो
काफ़ी है
एक पल!

28.12.83

रास नहीं आता

मैं झाग हूँ झाग
पानी नहीं
न तो आग
मैं हूँ—सिर्फ़ झाग।

प्रमाण—
किसी उथल-पुथल का
पानी की बेचैनी का।

पंचनामा जो लिखता सूरज
किरनीले हाथों
रास नहीं आता
पानी को,
हवा के हाथों
मिटा देता।
धो दिया जाता
जैसे दाग़
मैं हूँ झाग
पानी नहीं
न तो आग!

19.7.84

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ज़ख्म पर बेसाख्ता उंगली

बात ही
दो टूक - सी करता

जिस कुहर में
ज़ख्म चाहे हो छिपा
उंगलियाँ
बेसाख्ता जातीं
उधर ही।
तिलमिला उठते
सभी के प्राण
दर्द से खोजे
बहुत हैं त्राण
पोरों में बसा वह !
जी चुके हर दर्द को
बहुभाँति
अगणित वर्ष...
आँसुओं की झील,
सरिता—पी चुके।
पर,
प्रदाही दर्द की यह
शुष्क बेहद बाढ़
आज भी तो
झेलनी पड़ती।
वर्षगाँठें
ज़ख्म की
हर रोज़ पड़ती
आ रहीं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रोज़
उनके
जन्मदिन मनते
रोज़ मैं गढ़ता
नयी-सी
दर्द की···
ना !
जन्म की कविता।

बात कुछ
दो टूक-सी करता
और धरता
ज़ख्म पर वेसाख्ता
उंगली !

15.4.85

कैसे बढ़ सकेगी, आगे ?

कुछ लोगों को
कीचड़ से निकालने में जुटा एक हाथ
काट दिया गया,

त्राण की सम्भावना,
बन गयी,
ढलान पर लुढ़की गेंद।

संकल्प को डँस गया
क्षुद्र स्वार्थ—फिर !

पालकी ढोते कहार को मिली
मौत की बख़्शीश !
कैसे बढ़ सकेगी
आज़ादी की सवारी—आगे ?

31.10.84

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सूरज का भी मिटता प्रमाण

तुम
क़दम चार या पाँच
भले आगे रह लो
इस दूरी को
मानो चाहे जितना अनन्त,

छूने की कोशिश
—खेल बहुत ही मज़ेदार
हर सुबह
खिसक जाता थोड़ा
आगे दिगन्त।

आगे - पीछे
पीछे - आगे
चल रहे लोग
कुछ—थके-थके
कुछ—गिरे-गिरे
कुछ—तेज़-तेज़।

कुछ
लाशों से ही चिपक रहे
कुछ
लाशें रौंद बढ़े आगे
कुछ
लाश उठाये काँधों पर
प्राणों की सरिता खोज रहे

आगे-पीछे की बात नहीं
पहले-अन्तिम की नहीं बात

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मतलब तो बस मक़सद से है
जिसकी ख़ातिर चल रहे लोग।

जब दसों दिशाएँ खुली पड़ीं
उत्तर-दक्षिण में क्या रक्खा?
क्या रक्खा ऊपर-नीचे में?
पूरब-पच्छिम में क्या रक्खा?

है हवा, महज़ कुछ मीलों तक
सूरज का भी मिटता प्रमाण
धरती की गोदी से बाहर
उड़ सकता है अपना विमान।
—पर अन्तरिक्ष का अन्त कहाँ?

दूरी,
नक्षत्रों की दुनिया
नक्षत्रों की इस दुनिया में
आगे-पीछे
चल रहे लोग।

20.10.85

आँधियाँ पीछे

गरुड़,
तौलता जब पाँखें
आकाश नहीं रहता सोया
खोलता वह आँखें
उड़ानें भरता
—आगे जाता गरुड़
आँधियाँ रह जातीं
हवा में
पीछे।

12.12.82

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

क़िस्सापसन्द डरता है

वह
जो क़िस्सागो हैं
डरने लगे नहीं
डरते ही आ रहे हैं
फ़क़ीरों से।

क्यों ?
फ़क़ीरों में ऐसा क्या है
जिससे डरा जाये ?
डरने-जैसी तो कोई बात ही नहीं
उनमें ?

क़िस्सागो
जानते बहुत
बखानते क्षण-क्षण
नहीं जानते पर
दुआ के लिए
उठाना, जोड़ना हाथ।

क़िस्सागो
दुआ करना
नहीं जानते
जबकि फ़क़ीर
आसमान की ओर हाथ उठा
कुछ बुदबुदा सकता,

और कोई सुने कि न सुने
समझे कि न समझे
हवा में कुछ हो जाता है··
कोई हलचल।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लहरें,
भले ही ऐसी क्षीण हों
कि किनारों तक
न पहुँच पायें।
पर,
झील के अन्दर का चाँद
तिलमिला,
तरमरा,
त्योरा—
हिल तो उठता है।
यह हार है।
हार
जिससे क़िस्सापसन्द
डरता है।
···इसीलिए
···क़िस्सागो
फ़क़ीरों से डरता है।

25.11.83

उड़ आ रे !

एक जोड़ी आँख। एक जोड़ी पाँख।
खुला आकाश। नीला आकाश।
"उड़ जा रे पंछी
उड़ जा।"
"खोल दे रे आँख। खोल ले रे पाँख।"
बोला आकाश, नीला आकाश।
"आ जा मेरे पास! आ जा मेरे पास!
उड़ आ रे पंछी
उड़ आ!"

1.8.82

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दो आँखों में आन सिमटता

बहुत कठिन है हार !
लाख बुझाओ, लाख मनाओ,
मन को कब स्वीकार ?
बुद्धि देखकर सुन्दर अवसर
भाँति-भाँति के तर्क जुटाकर
रच देती षटराग !

मुँह लटका कर
गाल फुला कर
बच्चों-सा हठ ठान,
मन विवेक को
कर देता लाचार।

बूढ़े बाबा, बड़के भैया
बहन, पिता या प्यारी मैया
पकड़ बटुक का हाथ
चल देते बाज़ार—
बहुत कठिन है हार
लाख बुझाओ, लाख मनाओ
मन को कब स्वीकार ?

धन का घाटा पद भरता है
पद को छोटा यश करता है
दान
धनी को यश देता है।
त्याग बड़ा है,
सेवा उत्तम,
ऊँचा उठना—
करुणा के दम

अद्‌भुत्-सा व्यापार,
बहुत कठिन है हार !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लाख बुझाओ, लाख मनाओ
मन को कब स्वीकार ?

सबसे अच्छा लड़ना-भिड़ना
सबसे अच्छा मरना-कटना

कभी त्याग की खुशबू ले ली
दान बेचकर महिमा पा ली
दख़ल और वेदख़ली में ही
जीवन दिया गुज़ार !
बहुत कठिन है हार !
लाख बुझाओ, लाख मनाओ
मन को कब स्वीकार ?

चस्का सुख का पड़ जाता जब
ठहरा पानी रुच जाता जब
हवा
बोलने-सी लगती है।
मन चिड़ियों-सा उड़ने लगता
कभी मीन-सा तिरने लगता
कभी गगन-सा फैला - फैला
वही अमृत-सा वही विषैला

दो आँखों में आन सिमटता
विस्तृत सब संसार
बहुत कठिन है हार
लाख बुझाओ, लाख मनाओ
मन को कब स्वीकार ?

25.12.85

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सुस्ता सके सौभाग्य

पत्थरों से रिश्तेदारी जोड़ो
तो कोहेनूर
एक पत्थर ठहरेगा।

इस पत्थर ने ली हैं
कितनी जानें!
कितनों का
बढ़ाया है रुत्बा!
मगर हिमालय-जैसा
कभी न हुआ।

हिमालय,
जिसके कन्धों पर
बैठने वाली चिड़िया
जब फैलाती पंख
खेतों पर
तो नाचने लगती
धान की हरियाली,
और नाद में मुँह डाल
सानी खाते बैल
लगने लगते
युद्ध से लौटे
विजयी सिपाही-जैसे।

हमें कोहेनूर नहीं
हिमालय चाहिए
जिसके पृथुल स्कन्ध पर
सुस्ता सके
हमारा सौभाग्य।

18.7.85

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सूरज बिल्कुल नया सा

एक समय
ऐसा भी आयेगा
जब आदमी, आदमी का दोस्त होगा,
आश्चर्य के कारण बनेंगे
दुश्मनी पालनेवाले।

पेड़ की पत्ती तोड़ने के पूर्व
लोग लेंगे
उनकी रज़ामन्दी।
टपकायेंगे वृक्ष
ज़रूरतमन्दों की ज़रूरत भर फल
धन्यवाद करता
वृक्षों का
आदमी लौटेगा घर।

माँगने की ज़िल्लतें
और ख़रीदगी की ज़हमतें नहीं रहेंगी।

आकाश की तरह निर्बाध
और हवा की तरह सुलभ
होगा जीवन।

एक दिन ऐसा भी आयेगा।

अपने रोमांच
और अपनी पुलक का हवाला दे
मैं कह सकता
कि वह दिन आयेगा
और ज़रूर आयेगा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

समय के इस रेगिस्तानी दौर के बाद,
उसके खूनी दरियाओं के
पारवाला देश
एक दिन प्रकट होगा
जैसे खुलता या उगता है
कोई दिन।

उस दिन भी सूरज
पूर्व दिशा में ही उगेगा,
यही रहेगी धरती,
यही रहेगा आकाश,
सिर्फ़ आदमी
इस से उस करवट हो जायेगा।
जीवन का एक पन्ना
पलट जायेगा।
और हम देखेंगे
अगले
पन्ने-पन्ने पर खेलता
एक शिशु-अध्याय !

ओह ! कितना कुछ
बदल जायेगा
कि सूरज लगने लगेगा
बिल्कुल नया-सा !
और आकाश
ज़्यादा,
खूब ज़्यादा खुला-सा।
एक समय ऐसा भी आयेगा !
एक समय ऐसा भी आयेगा !!

4.5.85

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ज़्यादतियों की उपज

आग्रह नहीं
निवेदन कर सकता हूँ
बादशाह हो
बादशाहत, कैसे छीन सकता हूँ ?

नींद,
अच्छी चीज़ है
मगर नींद में चलने का तो
इलाज होना चाहिए।
नींद में चलना—
प्रमाण है
दिमाग़ के
ग़लत ढंग से
शरीर के इस्तेमाल का।
दिमाग़ को
ऐसा नटखट
नहीं होना चाहिए।
शरीर जब आराम में हो
दिमाग़ को
ख़लल नहीं
डालना चाहिए।
बल्कि उसे करनी चाहिए
शरीर की पहरेदारी।
यह तो
किसी देश पर
दूसरे देश की चढ़ाई-जैसी
बात है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यह तो
खेत किसी का
जोते कोई वाली बात है।
यह ग़लत है।

मगर मैं आग्रह नहीं
निवेदन कर सकता हूँ।

कुछ शरीर
दिमाग़ से बग़ावत कर देते।
पड़ते लाचार
अदावत ठान लेते।
कोई भी ठानेगा,
जिस पर भी पड़ेगी
बाज़ नहीं आयेगा।

बग़ावत तो
ज़्यादतियों की उपज है।
ज़्यादतियाँ हैं बीज
बग़ावत फ़सल है।

ज़्यादतियों के
जो भी हों कारण
बग़ावत का एकमात्र कारण
ज़्यादतियाँ हैं।

मगर मैं आग्रह नहीं
निवेदन कर सकता हूँ।

छीलते जाओ प्याज़ की पर्तें
एक-एक कर।
मिटता जायेगा।
बेकार है,
वृक्ष के अन्दर वृक्ष की तलाश।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अक्षर वृक्ष है कि नहीं
कौन कहे?

कहते हैं—
एक प्रकार से—
दूध रक्त है।
किन्हीं ग्रन्थियों का करिश्मा।
माँ पिलाती है रक्त
मगर, बच्चा दूध पीता है।

हरियाली को समझते हो
तो तनों को मुलायम करनेवाली सरसता को
तुरन्त पहचानना चाहिए।
नहीं रहे तुम
बच्चे अब,
ये बातें
तुम्हें जाननी चाहिएँ।

दस हज़ार वर्ष आयुवाले की
बच्चों-जैसी हरकत—
नहीं है शोभनीय।
बच्चों को मिलनेवाली छूट के लिए
बच्चा बने रहना
कैसी-कैसी तो···
हाँ,
अच्छी बात नहीं।

मगर तुम बादशाह हो
और मैं,
सिर्फ़ निवेदन कर सकता
तुम्हारी बादशाहत
कैसे छीन सकता?

2.5.85

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

निदानों का नाम देश

देश की नहीं
समस्या, मेरी अपनी है।
मेरी हर समस्या देश की है।

वह भी कोई देश है
जिसकी समस्याएँ
उसकी अपनी हों?
वे देश लुटेरे हैं
जो लोगों की समस्याएँ
छीन लेते हैं
और बुनते हैं चादर
समस्याओं की तानी-भरनी से
उगाते हैं
चादरों में
विपदाओं के फूल।
समस्याएँ
समस्याओं से मिल
ढूंढ़तीं निदान।
यानी वे चाहतीं
कुछ और जीना।

समस्याओं नहीं,
निदानों का नाम है देश।
अभी सारे देश
नक़ली हैं!

16.10.85

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पाँव से उठ, माथे पर

मन,
रह पाता यदि
एक-सा
हवा
कभी शान्त
कभी तूफ़ानी
नहीं होती।
आदमी
न तो जनमता
न मरता,
बचपन
जवानी
या बुढ़ापे में
कहीं,
ठहर जाता।
वन्द हो जाता
सूर्य का उगना-डूबना
बोलने-बतियाने की
कोई ज़रूरत न रहती।

मन,
एक जैसा नहीं रह पाता
और एक जैसा
नहीं रह पाता प्यार।
भटकता फिर रहा वह
कभी जंगल, कभी पहाड़।
कभी-कभी
आकाशगंगा तक।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सम्बन्धों में
कोई खारापन है
समुद्री—
नहीं बुझ पाती
प्यार की प्यास ।

यह प्यासा प्यार
भटक रहा
मेरी उंगलियों
मेरे सपनों में
मेरे मन की दुर्गम पहाड़ियों में
लगभग बेसहारा
बिल्कुल अकेला ।

मैं
प्यार की छाँह हूँ
जहाँ-जहाँ है यह
वहाँ-वहाँ मैं हूँ ।

और प्यार
प्यासा है।

मुझे
इसकी प्यास बुझाने को
कुछ करना चाहिए
इसके पाँव से उठ
इसके माथे पर
छाना चाहिए।

15.10.85

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हठ ठान कर

ज़िन्दगी
झोंका हवा का,
खेत में भी
रेत में भी।

ढूंढ़ती-सी
या कि अल्हड़,
बेवजह फिरती भटकती।

ज़िन्दगी
जैसे
हवा पर तैरते
बादल घनेरे
चाहतों की माँग पर
बरसें-न-बरसें
कौन टेरे !

ज़िन्दगी
दिन-रात का मेला
सुबह है
साँझ भी है।
कोख है सन्तानवाली
बाँझ भी है।

लाख चाहो
रेत पर गर्मी रहेगी
लाख चाहो
रेत पर वर्षा न होगी
बाँझ कोखें
लाख रोयें,
लाख तरसें
कोख में सन्तान की
हरकत न होगी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ज़िन्दगी झोंका हवा का,
खेत में भी
रेत में भी।
पर,
धरित्री गर्भ में है
भाग्य सोता।
सदा सलिला
पुण्यतोया का
यहाँ श्रृंगार होता।

श्रम करो,
खोदो धरा को,
या—
भगीरथ की तरह
हठ ठानकर
गंगा उतारो।
आयु की छोटी सड़क को
और कुछ लम्बी बनाओ!

हिल गयी लौ

तराजू नहीं वातें करो निकुती की।
तौलने के काम में जरूरी है महीनी।
हिल गयी लौ जरा भी जो?
इनकार नहीं कर सकते
हवा की जुम्बिश का।

12.12.82

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गाने लगता द्वीप

बातें
छन्दों में भी
उतनी हो सकतीं माक़ूल
दावा जितने का करते हैं
अपर वर्ग के लोग।

मगर, कठिन है
छन्द जगाना
मन के भीतर।

क़लम बाँधना,
छींटे देना,
और ताकना राह—
अँगड़ाई की—
जीवन जब जगता है—
पर्दे हिलने लगते जैसे
दूर भविष्यत् के घर।

छिछली होकर नदी
राह देने लगती—
द्वीपों को।

पानी की पतली चादर से झाँक
कुछ कहने को
व्याकुल-से वे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लाद पीठ पर
जंगल कासोंवाला
गुन-गुन गुन-गुन गाने लगता द्वीप
खरहों की फुदकन में जैसे
जीने लगते स्वप्न।

बाँध झोंपड़ी
इस निर्जन में
रात बितानेवाले
साँपों औ' भल्लूकों से
दिन-रात ज़ूझनेवाले

जीवन की बहती बयार हैं।

24.12.85

थोड़ा-सा प्यार, बीज-सा

झाँकती है तस्वीर से
जंगल की गहराई
और याद आती हैं
तुम्हारी आँखें।
व्योमचारी चील-सी पुतलियाँ
घुल जानेवाली
अपनी गहनता में।
इस अथाह में रहता मैं
सिर्फ़ अपने लिए
छुआ जाता हुआ
तुम्हारी सघनता,
फैलाव से।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बाहर
हो रही वर्षा
बादलों के घटाटोप ने
आकाश को बन्दी बना लिया है
और
हवा पर लाद दी है
सर्दी,
जो,
पीट रही किवाड़
ताबड़तोड़
पगली-सी !

पेड़ों तले खड़ी गायें,
सिकोड़े बदन,
कँपतीं।

मुझे चाहिये
थोड़ा-सा प्यार
न मोल
न उधार,
बीज-सा,
कि उग सके,
पक सके,
कट सके।
उदास है कोख
एक बच्चे के लिए
कोई स्तन
दूध पिलाने को—
व्याकुल।

15.4.84.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कुछ सूखे, कुछ बाढ़ें

कुछ धुआँ उठे.
सिंकती रोटी की गन्ध उड़े—
सोंधी-सोंधी।

दरवाजे पर
पाहुन बैठें
कुछ चुहल चले
या बातें हों—
बीते दिन की
आते दिन की
कुछ दुःख-सुख की।

फिर रात गिरे
फिर रात ढले
खोलें पाँखी
दिन की पाती।

फिर दिन बीते
खेतों के संग
हल, खुरपी, वृषभ
बीज के संग।

फिर साँझ पड़े
फिर धुआँ उठे
सिंकती रोटी की गन्ध उड़े।

इसमें ही कुछ सूखे झेले
इसमें ही कुछ बाढ़ें झेलीं

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बचपन बीता
फिर युवाकाल
बेटी के पीले हुए हाथ।

कितनी फ़सलें डूबीं,
सूखीं,
कुछ खलिहानों तक भी पहुँचीं।

मेड़ों के मध्य घिरी धरती
क़िस्सा इसका
कब शेष हुआ
सब ठीक-ठाक
तब फ़सल मिली

वर्ना दरकी।
छाती दरकी।

कुछ धुआँ उठे
सिंकती रोटी की गन्ध उड़े
सोंधी-सोंधी।

22.10.85

अचम्भा है

आसमान
कहीं ज्यादा, कहीं कम गहरा,
नहीं होता,
एक-सा है अनन्त।
दिशाहीन नहीं, समेटे सब दिशाएँ।
आसमान एक अचम्भा है!

9.12.82

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यह भी ··· वह भी

यह भी सच औ' वह भी सच तो झूठ कहाँ है ?
हरे-भरे सब वृक्ष-विटप तो ठूँठ कहाँ है ?

क़त्रा-क़त्रा, दरिया-दरिया,
शबनम-शबनम,
मोती-मोती
रात का आलम सोया-सोया
दिन का मुक़द्दर
हलचल-हलचल ।
यह भी सच···

बात पते की नहीं मिले जो,
राज़ का पर्दा नहीं खुले जो,
दामन-दामन, काँटा-काँटा ।
गुलशन-गुलशन सहरा-सहरा

सुबह का मसला रंगीं - रंगीं
साँझ गिरे तो बड़ी कुढंगी ।

मतला - मतला, बदला-बदला,
मिसरा- मिसरा, छूँछा - छूँछा ।
यह भी सच···

सुबह का भूला, साँझ को लौटा
देर रात में काम से लौटा
काम से लौटा, लाम से लौटा
सूरज लौटा, चन्दा लौटा
आना सच, या जाना सच है ?
यह भी सच···

8.1.84

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भूले रहेंगे कब तक ?

मिलें जो कहीं कृष्ण
पूछूँ यह बात
याद है
कि भूले वे—
बाल-सखाओं का साथ ?

बाल-सखाओं का साथ
यानी, झुण्ड बाँध
जंगल में घूमना
हाँकते हुए
गौओं-बछरुओं को,
करते कुलेल
साँझ गिरे
घर लौटना
गोपन मंत्रणाएँ वे—
गोपिकाएँ खिझाने की,
मित्र की पीठ चढ़
दही-माखन खाने की।

पहचानेंगे वे क्या—
वो पीठ
जिस पर
पाँव धर
उठे थे,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खोली थी जञ्जीर
खोला था कमरा
नवनीत चुरा
भाग खड़े हुए थे।

जरूरी है—
मिला जाये कृष्ण से
पूछी जाये बात
याद है
कि भूले वे
बाल-सखाओं का साथ?

लगता है
पुजेरियों ने
प्रारम्भ कर दिया है
करना घात!

प्रतिमा पर
जम चली
मिट्टी और राख।

पूछना होगा कृष्ण से
कि क्या उन्हें
पसन्द है यह सब?

भूले रहेंगे वे
मित्र पीठों को कब तक?

20.11.84

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बर्फ़ीली कैद के दौर से

पानी की एक भी बूंद
जिसे स्वीकार लेती
नदी उसे
नहीं नकारती।

अपने एक-एक क़तरे की
नदी
बाज़ाब्ता इज़्ज़त करती।

मगर, कभी-कभी
बूंदें
हैसियत लाँघ जातीं,
टूटतीं
नदी से
किनारों तक फाँद पड़तीं।

तब,
शुरू होती
एक लम्बी यात्रा
जिसमें बूंद को
बादलों तक उठना पड़ता
कुछ को
बर्फ़ीली क़ैद के दौर से
गुज़रना पड़ता।

24.4.85

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बस, हुक्म की तामील

कोई कहे
कि तू पहाड़ चढ़ जा
तो यह
कोई कहना नहीं हुआ।

कोई मुझसे कहे
कि चढ़ जा पहाड़,
वहाँ क़िला है,
क़िले में राजमहल है;
राजमहल में सुख है।
फिर, सुख में क्या है?

—और,
जब सुख में कुछ है ही नहीं
फिर उसे पाने में क्या है?

पहाड़,
क़िला,
राजमहल,
और सुख हैं
तो जाना चाहिए।
किसी को जाना ही चाहिए।

मगर मेरा सवाल
दुखों का वफ़ादार है,
वह
सुख के हर राही को
वरग़लायेगा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पूछो मत क्यों?
पूछो मत क्या?
बस,
हुक्म की तामील करो।

1.11.85

इस मिलन-स्थल पर

अलग-अलग हैं
तुम्हारी और मेरी राहें।
मगर,
काफ़ी है क्या,
इतनी-सी बात,
कि, हो जायें हम
एक-दूसरे के दुश्मन?

इस भरी, दहकती दोपहरी में,
वट-वृक्ष की इस ठंडी छाँह तले
आओ! हम बैठें
कुछ बात करें।
सुनायें अपनी-अपनी कहानियाँ
ताज़ा उन्हें
कर लें।
हँसें, हँसायें,
अपनी मूर्खताओं की कथाओं से
खुद का, और दूसरे का
जी बहलायें।

इस चौबटिया से
चारों दिशाओं को जाती हैं राहें,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दो की जानकारियाँ हासिल
हम दोनों को
बाक़ी दो पर हम चल लें।

बात अगर बन जाये किसी तरह
किसी एक पर बढ़ें
संग हो लें।

क्या हुआ जो राहें अलग हैं?

इस मिलन-स्थल पर
जी भर कर
आओ ! हम
एक दूसरे का स्वागत करें
सत्कार करें।

जून, 82

खड़े होने को

वह लोग
बनना चाहते थे जो
मेरे पांव—
ख़फ़ा हो गये।
क्योंकि
मैं चल सकता था।
और
मेरे हाथ बनने के इच्छुक
रूठ गये
क्योंकि हाथ
मेरे पास अपने थे सक्रिय !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

न केवल सक्रिय
बखूबी सजा सकते थे
आरती की थाली,
बाल सकते थे दीप,
अँजुरी भर फूल
कर सकते थे सर्मापित।

बड़ी उत्सुकता थी लोगों में,
बनने को तत्पर थे सब—
मेरी आँखें,
मगर देखकर प्रतिबिम्बित,
स्वयं को;
मेरी पुतलियों में,
झुक आयीं
उनकी गर्दनें !

तब फिर
असंख्य लोग मेरे सामने खड़े थे
इन्हें चाहिये थीं : आँखें
इन्हें चाहिये थे : हाथ,
चाहिये थे : पाँव।

तब,
मुझे बनना पड़ा आकाश
कि वह मुझमें समा सकें।

मुझे बनना पड़ा हवा
ताकि मैं उनका स्पर्श कर सकूँ।
मुझे बनना पड़ा धरती
ताकि
खड़े होने को
उन्हें मिल सके ज़मीन।

2.5.83

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

असलियत के आकाश पर

ज़ुबानें हो गयी हैं—
कुर्सियों को,
खाटों को।

दफ़्तरों
और सोने के कमरों में—
होती हैं,
मेरी चर्चाएँ,
तोहमतें,
व्याख्याएँ!

होटलों में,
चायघरों में बैठे लोग
किस ज़ख्म को छुपाने को,
किस टीस का असर भुलाने को,
मेरी चर्चाएँ करते हैं?

हर कोई,
ईसा या बुद्ध नहीं होता।

ज़ेह्न की दीवार पर,
तस्वीर की क़तारों में,
इनके साथ,
जिसे चाहो—विठा लो;

असलियत के आकाश पर
हर किसी को
तारों की हैसियत से
नहीं टांक सकते।

6.8.82

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कुतूहलवश भर लेते घावों से

कुछ ही लोग होते
जो सह सकते
तुम्हारी समृद्धि।
वह भी
महज़ इसलिए कि
कहीं उसे भोग सकते।

वर्ना, गाँठ बाँध लो,
समृद्धि
सदा जलाती है
पर को, अपर को।

इसी कारण, समझदारों ने
बतायी है राह
सादगी की।
मगर, क्षमा करें पक्षधर,
सिद्धान्त यह
पाखंड भर !
ऐसे लोगों के
दो ही अन्त हैं,
या तो वह करें आत्महत्या,
या फिर अपराध के
भारी विस्फोट को
रहें तैयार।

समृद्धि के विलोम में जो जीते
भूखे शेरों को
समृद्धि का रक्त चाहिए।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मगर, समृद्धि का रक्त
असर नहीं खोता,
शेर बन जाते
सुकोमल ख़रगोश
एक दिन।
समृद्धि की गोद
ऐसी ही होती।

दरअसल,
समृद्धि है
जीवन की सुविधाओं का
प्राचुर्य।
और आदमी
सुविधाओं का खोजी है।
कौतुकप्रेमी भी।
कुतूहलवश ही
भर लेता वह
घावों से
खुद को!

प्रश्न नहीं छोड़ता साथ

सिपाहियों को मालूम नहीं रहता
कि युद्ध के तुरन्त बाद
बेल दिये जायेंगे वे
रोटियों में।
उनकी ज़रूरत
रह जायेगी लिपटी
शामों में
जब किसी हत फौजी के शौर्य की गवाही देने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उन्हें बुलाया जायेगा
नागरिक सभा
या अभिनन्दन में
जहाँ ऊब भरे कानों से जुड़ी आँखें
—पुरुषों की
टटोलती फिरेंगी—
औरतों के जिस्म।

और स्त्री आँखें
तौलती फिरेंगी
झुमके,
बालियाँ,
स्वर्ण-जंजीरें।

ठेठाती रहेंगी
उनकी दिमाग़ी छतों को
विचारों की बूंदें,
उगता-डूबता रहेगा
कामनाओं
योजनाओं का
इन्द्रधनुष।

और लहू की नदी तैर
वापस एक इन्सान
खुश-खुश
लौटेगा घर
हाथ में लिये फूलमाला,
कोई ताम्र-पत्र
या एक टुकड़ा
काग़ज़ का।
हर जिस्म के बोझ तले
कराहता रहेगा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment; Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एक बूढ़ा,
चिरपिपासु सवाल—
जिसकी प्यास,
बुझा नहीं पायी—
लहू की कोई भी नदी।

हर युद्ध के पूर्व
वह पकड़ता हमारे हाथ,
करता मिन्नतें :
तलवारों को वापस
म्यानों में डाल लेने की।
मगर,
युद्धक्षेत्र की ओर दौड़ पड़ने को
उदग्र-आतुर अश्वों की टापों में
डूब जाती
उसकी आवाज़।
प्रश्न
नहीं छोड़ता—साथ।

युद्धभूमि से जब लौटते हम
क्षत-विक्षत औ' क्लान्त
आँसुओं के अर्क से
व्रणों को पोंछता
जैसे
हम हों
उसकी सन्तान।

8.3.84

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नयी दुनिया ईजाद करे

सबसे अच्छा तरीक़ा
भूलना नहीं—
बाद देना है
ख़ासकर
जब चीज़ें
सही रास्ते लगने को
उत्सुक हों।

कोई गिलास लुढ़क जाये
तो उसे सीधा कर रखने में
कोई अड़चन नहीं।
मगर, आहत अभिमान
आदमी को
गिलास में
ढलने नहीं देता।

इतिहास
घाव भरने के अवसर
नहीं देता।

हमारी पीठ पर
बिच्छुओं भरा झोला है,
और बिच्छू
डंक मारने से
बाज़ नहीं आते।

और हम,
झोला फेंक नहीं सकते;
क्योंकि झोलों में पड़े हैं
कई नक़्शे।
जो, कुछ स्वप्नों ने
हमें दिये हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इन नक़्शों से उठकर,
कोई हाथ,
हमारी पीठ सहलाता है;
और, छूमन्तर हो जाती जलन,
छूमन्तर हो जाता दर्द।

ज़िन्दगी—
नाम है,
दर्द और जलन की
उठती-गिरती तरंगों का।
मगर,
वह क्या करे
जिसकी तरंग उठना तो जानती है
गिरना नहीं जानती।

तरंग गिरने की
राह देखते-देखते
डूब जाता
जिसका दिन।

उसके लिए
क्या यह सही नहीं,
कि वह उतार फेंके,
पीठ पर लदा झोला ?
और,
मतलबों की कोई
नयी दुनिया
ईजाद करे ?

24.11.85

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पथप्रदर्शक पाँव में ज्यों शूल

प्रश्न टेढ़े पूछना अच्छा नहीं
डालकर आँखें किसी की आँख में।

व्यर्थ क्यों खौलाइयेगा खून ?
व्यर्थ क्यों लज्जित किसी को कीजिये?

काम हर के पास कितने ढेर से
क्यों किसी के बोझ में
कुछ जोड़िये?

हाँफता हर एक है दिखता यहाँ
चाबुकें फटकारिये, अच्छा नहीं।

चूस सकते हैं नहीं जो दर्द
छूइये तो मत—
कृपा कर घाव!

देखते हैं क्यों
गँधाते और गलते अंग?
चोट करने में
नहीं हैं दृष्टियाँ कुछ कम!

प्रश्न
आँखों से निकलते
तीर से
वेध देते प्राण
कि जैसे
काँपने लग जाये
कोई झोंपड़ी
तेज बहते
वायु के संघात से।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आँधियों में लड़खड़ाते पाँव
ज़िन्दगी खुद को चढ़ाती दाँव—
हारती हर बार।
हर दफ़ा ही
टूटते कुछ स्वप्न।
हर दफ़ा
कुछ
सूर्य-सा उगता,
आइने में
बाल पड़ जाता
स्याह पड़ जाता दमकता रोशनी का मुख!

शोख़ियों पर शहर की
ज्यों धूल पड़ जाये
पथप्रदर्शक पाँव में
ज्यों शूल चुभ जाये!

23.12.85

किसी अन्धे विवर में एक दुनिया

सृजन की आग में कुछ चाहिए
सूखी हुई समिधा।
पवन को छोड़कर आलस,
क़दम कुछ तेज़ धरना है।
हवा की चाल में अन्तर,
नहीं कुछ बात वढंगी।
सही है आग का जलना,
सही है आग का बुझना।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मगर, सूरज नहीं स्वच्छन्द
अपनी राह तजने को
कि मन के लघु इशारे पर
किसी दिन रोक ले उगना,
कि पत्थर पर पड़े पत्थर
बिना चिनगारियाँ छिटके!

विपुल परिवर्त्तनों के बीच
कोई चीज़ खोयी-सी,
तुमुल रव मध्य कोई आँख
रहती बन्द सोयी-सी।

नहीं तो जन्म का उत्सव
नहीं तो मृत्यु का क्रन्दन
जगा पाती।

उधर
रुकता नहीं पल भर
समय भागा चला जाता।

विकस कर टूटते नाभिक
नया ऊतक जनम आता।
किसी अन्धे विवर में
एक दुनिया मौन हो जाती।
किसी "बिग बैंग" से
प्रारम्भ होता फिर
नया क़िस्सा।

कि कोई कार्ल सागाँ
भौम पर आवास की कहता
किसी फ्रेड हॉयल को
हिमयुग निकट आता हुआ दिखता।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मगर रीगन
गुलामों के गले की फाँस
कसते हैं ।

कहें क्या ?
मारग्रेट थैचर
मुहैया जगह करती हैं
कि जो आधार होगा
एक दिन
नक्षत्र-युद्धों का ।

नहीं
इस शोर पर भी
बन्द सोयी आँख
खुलती है ।

किरण के फूल
खिलकर
बिखर जाते—
चुप्प !
अजिघ्रित !

24.12.85

मत पूछो

सूर्य के जन्म पर जनमा
स्वागत हूँ
रूप-रस-गन्धपूर्ण एक आगत हूँ
दो स्वरों बीच ठहरा मौन
मत पूछो मैं हूँ कौन !

9.12.82

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पीली पड़ती जा रही आदमियत

अभी हाल तक
तूँबी लगाने का
रिवाज था।
तूँबी लगाना
यानी, ज़हरीले लहू—या दूषित वायु को
शरीर से निकाल फेंकना
स्वास्थ्य के लिए
जरूरी समझा जाता था।
अगर
आदमी को
आदमियत का लहू समझो
तो समझ सकते
आदमियत की रगों में वह रहा है
विषैला रक्त
जिसे शरीर से बाहर
निकाल दिया जाना चाहिए।
मगर,
आदमियत के डॉक्टर
इसकी अनुमति नहीं देते
मेरी समझ में नहीं आता
वे ऐसा क्यों कहते।
कौन-सी दवा है उनके पास
जिससे
वे शोध सकेंगे रक्त?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

किस रसायन से
वे बनायेंगे
ज़हर का नमक
और फेंक देंगे बाहर
उत्सर्जनों की राह ?

कैसे ?
और कब ?
जबकि
स्वस्थ रक्ताणुओं पर
रोज ही हो रहे हमले
रोज ही उन्हें बनाया जा रहा कमजोर
पीली पड़ती जा रही आदमियत
रोज़-ब-रोज ।

16.10.85

क्यों उन्हें मारे डालते ?

बाज़ चीज़ें
बहुत नाज़ुक होती हैं,
उन्हें
बारीकी से न छुआ जाये, तो
टूट जाती हैं।
और कुछ चीज़ें तो ऐसी हैं
जिन्हें छुआ ही नहीं जा सकता
उन्हें तो बस
देखा या सुना जा सकता है।

ऐसी चीज़ों को हाथ क्यों लगाते हो ?
असमय ही क्यों उन्हें मारे डालते हो ?

जून, 82

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हाथ में जनमी सुगन्ध

क़लम पकड़े
मेरे इस हाथ में
समा गयी है
गुलाब की सुगन्ध
जिसने
मुझे
चारों ओर से घेर लिया है
जैसे
हल्दीघाटी और पुष्कर के बग़ीचों से
—गुलाब के बग़ीचों से उठ
समा जाती
हवाओं में
सुगन्ध
और धरती को लपेट लेती।

तुम तक क्या
मेरे हाथ में जनमी
यह सुगन्ध
पहुँच जाती है?

क़लम और शब्दों के घेरे को
क्या यह
तोड़ पाती है?

जुलाई, 82

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

घुला दो लाल पानी में

जोहान्सबर्ग !
जोहान्सबर्ग !!
मालूम है तुम्हें ?
जानते हो तुम ?
इन काली पहाड़ियों पर
कहाँ से उग आये
—सफ़ेद दाग़ ?

काली पहाड़ियों पर
चढ़ती जब
मेरी दृष्टि
सफ़ेद दाग़ों की बग़ल से गुज़रते
टू ट ता
उसका संगीत।
अच्छे नहीं लगते ये मुझे।

जोहान्सबर्ग !
पहाड़ पर पड़े इन दाग़ों को मिटाओ
या चढ़ाओ
पहाड़ का रंग
इन पर।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ये सफ़ेद अंगारे
पहाड़ों को कभी
ओस से नहाने नहीं देंगे।
उत्तप्त शिलाखंडों तक
तितलियों को
आने नहीं देंगे।

न तो इसकी छाँह तले
लगेंगे
मधुमक्खियों के छत्ते।

जोहान्सबर्ग,
जोहान्सबर्ग,
घुला दो इन्हें
लाल पानी में!
जल्दी मिटाओ ये धब्बे।

5.9.85

नीला होता ही

कोई अर्थ नहीं
प्रहारों का
आसमान
नीला होता ही है!

29.11.85

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कहाँ आया हमें

तकलीफ़ों का क्या ?
खींच लीजिये भूखवाली ज़मीन
किसी और पर खड़ी हो जातीं।

फिर भी, खिसकायी जानी चाहिए
यह ज़मीन।
खड़ी होने के लिए
ज़िन्दगी को—
चाहिए ही
कोई और
माक़ूल-सी ज़मीन।
फैला सके जहाँ वह
अपनी जड़ें
और गुदगुदा सके उसे,
—हरियाली से—
जिस हवा में ले साँस।

हो सकता है
खून-पसीना एक करना पड़े,
और, सींचना पड़े इसे
खून से,
ज़िन्दगी बोने के पहले।

जो भी हो
मोल
चुकाना तो पड़ेगा
चुकाना ही पड़ता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दुनिया देखनी हो
तो जागना ही पड़ता है।
दुनिया दिखने का मतलब
सपनों का साथ छूटना
और टूटना
बाँध रखनेवाले भ्रमों का।

भ्रम जो है—
भूख के साथ समझौता
एक क्रम है
अच्छी-बुरी परम्पराओं के जीने का।
मात्र उस आदमी की यादगार
जिसे आग जलाना
नहीं आता था।

भागता था
जो अपने-जैसे दूसरों से
कमज़ोरों पर
टूट-टूट पड़ता था।
जब आदमी को
आदमी पर
भरोसा करना
नहीं आता था।

झेलता था सारे दुःख—अकेले
समूह में रहना
नहीं जानता था।

कहाँ आ पाया हमें आज भी
समूह में रहना?
आकाशगंगाओं के संग की चर्चा क्या?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एक पेड़ काटने तक में तो
हम नहीं लजाते
एक बार भी तो
जंगलों से
ख़ाली हाथ
नहीं लौट पाते !
हर लौटती बार
हमारे पीछे होती
एक वृक्ष की लाश !

क्यों हमारे पीछे एक लाश होती
और आगे होता
घुप्प अँधेरा
भूख की ज़मीन पर उगनेवाला ?
यह अँधेरा
गला घोंटता
बुनियादी सवालों का
औ' उजड़ जाती
जिन्दगी की गोद।

क्या तुमने देखी हैं
वह माँएँ
जो निस्सन्तान हो गयीं ?
माँएँ कभी उदास न हों
यदि जनन की जवाबदेही से
छूट सकें।

मगर, कहाँ आ पाया हमें
समूह में जीना ?
अपना बच्चा
वही भर
जो जाया हो अपना !

24.11.85

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तेजाब जला देता

हम पहली ही बार
अपने को उँड़ेलना
नहीं जानते।
या, कृपणतावश
बचा लेना चाहते—
खुद को।

चाहे जो भी हो—
हम कभी अपने को
पूरा-का-पूरा
नहीं परोसते।
कान दिया
तो आँख बचा लेते।
दिल दिया
तो भाव छुपा रखते।
ग़रज़ यह
कि हम कुछ-न-कुछ
बचा रखते।
वह
जो हमारे भीतर बच जाता
धीरे-धीरे सड़ने लगता।
हमारा मनाकाश
बादलों से भरने लगता।

और हम जब भी बरसते
धरती के तालाब
बिलबिला उठते
क्योंकि
तेज़ाब
जला देता है।

जुलाई, 82

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कट-कटकर बिकते देखा

गवाह, दोस्त, है—
खा़ली मटका—
कुछ भी से भरने को राज़ी।
यद्यपि,
मटके का ख़ालीपन
ख़तरनाक है,
ज़्यादा ख़तरनाक है
उसका भरना।

मैंने अमूमन इसे
सच्चाई के लहू से भरते
देखा है
और जिसे किताबों में
ईमान कहते हैं
उसे
बकरे के मांस की तरह
कट-कट कर
बिकते देखा है।

रान,
छाती,
मूड़ा···
सबके अन्त में बिकते—
मुहब्बत और साहस के घर—
जिगर-कलेजा,
दिल
और गुर्दे !

16.12.85

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अनजानी बस्ती में कोई

पता-ठिकाना लिये बिना ही कूच कर गये हम।
पता-ठिकाना दिये बिना ही कूच कर गये हम।

अनजानी बस्ती मिलती है
बस्ती पर बस्ती मिलती है

वही चीज़ महँगी मिलती है
वही चीज़ सस्ती मिलती है

भेड़ों की पंगत मिलती है
शेरों की गश्ती मिलती है।

कहीं परिन्दे कहीं दरिन्दे
कहीं आम तो कहीं चुनिन्दे

हिम्मत औ' पस्ती मिलती है
अनजानी बस्ती मिलती है।

गारद कहीं; कहीं झोंपड़ियाँ
नारद कहीं; कहीं अप्सरियाँ

कहीं नशे में झूमे कोई
कहीं भूख से रोये कोई।

तरु की छाँह अचम्भे में है,
अक़्ल बन्द किस डब्बे में है?

मिलती नदी
नहीं कश्ती है
अनजानी बस्ती मिलती है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सक्ता लगता, कौतुक मिलता,
कहीं विदूषक, कहीं प्रदूषक
शोषित मिलता शोषक मिलता
कहीं प्रवंचित कहीं प्रवंचक

मस्त बहुत तो मिल जाते हैं
एक नहीं मस्ती मिलती है।
अनजानी बस्ती में कोई
ठौर नहीं कर पाये हम

पता-ठिकाना लिये बिना ही कूच कर गये हम।
पता-ठिकाना दिये बिना ही कूच कर गये हम।

21.11.84

आदमी : गौरैयों की तरफ

आकाश में उड़ती चील
सुन्दर तो लगती
मगर
इससे
चील की हिंसा
कम नहीं होती।

गौरैये की जान बचाने को
चील के साथ
सख्ती बरतनी पड़ेगी।

क्या होगा
अगर कोई पक्षी
आसमान में
उतना ऊँचा
उतनी देर तक उड़ता
नहीं दीखेगा ?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आकाश
इतना घवड़ा थोड़े ही जायेगा,
कि छूट जायेंगे बादल
उसके हाथों से;
न तो
उसके अँकवार से
निकल भागेगी—हवा।

उसकी नीली आँखों में
खून नहीं उतर आयेगा।
न तो दहशत या वियोग से
वह पड़ेगा सफ़ेद
या पीला।

चीलों की बनिस्बत
गौरैये
हमारे ज्यादा क़रीब हैं।

सिर्फ़ थोड़े नासमझ
कि आइने में उगे अपने प्रतिविम्ब को
समझते दुश्मन !
जब
हम नहीं रहते कमरों में
रहती गौरैया
चीं-चीं करती
आइने पर
चोंच पटकती।

हमारे
कमरे बन्द करने के काफ़ी पहले—
दीवार पर टँगी तस्वीरों के पीछे बने
अपने घोंसलों में
छुप जातीं

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

और सुबह
किवाड़ खुलने के साथ
निकल भागतों
खाना जुटाने के काम पर।

गौरैये
हमारे ख़ूब क़रीब हैं।
चील और उनके बीच
चुनने की समस्या
जब भी उठे
आदमी को
गौरैयों की तरफ़
हो जाना चाहिए।

उनके साथ धोका करना
गुनाह के निकट होना है।
और उनके पक्ष में होना
देश के लिए
हथियार उठाने-जैसा!

11.9.84

बगल में खड़ा नहीं दोस्त

समुद्र से,
जब भी ले लो,
वह देगा अपना ही पानी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गंगा,
वोल्गा,
आमेज़न का नहीं,
सिर्फ़ अपना पानी।

समुद्र पानी दे सकता
नदियाँ नहीं।

आदमी के अन्दर
जब समुद्र तैयार हो जाता
उसकी भाषा में
बादलपन आने को
कौन रोक सकता?
कैसे रोक सकता है?

जिन्हें नहीं पसन्द होंगे बादल,
वे समुद्र के दोस्त
नहीं बन सकते।

और दोस्त
सिर्फ़ वही नहीं हो सकता,
जो बग़ल में खड़ा है।

क्योंकि पहाड़,
समुद्र से बहुत दूर होते हुए भी,
उसके दोस्त हैं।

जिन पर विश्वास कर
समुद्र छोड़ देता
उनके पास
पानी का ख़ज़ाना।

5.12.85

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पसन्द करते पथरीली राह

ग़ोताख़ोर
नहीं मारे अगर
—ग़ोता
कैसे बन पाये
समुद्र तल से
हमारा संवाद ?

और समुद्र में बसतीं—
व्हेलें
शार्क,
बसता ऑक्टोपस।

वे
आदमी को नहीं पहचानते।
भोजन तलाशती उनकी आँखें
आदमी में
भोजन के सिवा
कुछ और नहीं देख सकतीं।

इन तूफ़ानों से गुज़र
समुद्रतल तक पहुँचना
कितना कठिन है!

मगर,
जुझारू लोग
पसन्द करते
पथरीली राह।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बेहतर समझते वे
बनना
भविष्य का हरकारा।

अन्तरिक्ष से समेट लाते
सूर्य की कुछ किरणें
जैसे,
कटी फ़सल को समेट
बोझे बनाते—
मज़दूर।

13.3.84

एक नन्हें फूल को भी चाहिए

मित्र मेरे बन सकोगे क्या ?

पल सकोगे छाँह में क्या
एक-दूजे की ?

ताप भी क्या,
सह सकोगे ?

स्वाद मुँह का
बिगड़ भी सकता,
लेखनी की नोक पर
जम जाये ज्यों कचरा
फेंक ही दोगे उसे क्या ?

क़लम
लिखने से कभी
मजबूर हो सकती,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कवि निचट सकता
कि जैसे ग्रीष्म का हो कूप,

पर,
तरंगों से भरा सागर रहेगा
बादलों की राह
कूपों पर झरेगा।

मित्रता,
जैसे कि अक्षर—
अर्थ के सर्जक।

वाक्य छोड़ो
शब्द के भी मूल में आओ
ध्वनि-सरोवर में
कमल के फूल बन जागो

मित्रता,
जैसे सरोवर
शान्त, सुस्थिर, मौन
अतल तल से उग रहा है
यह सुमन बन कौन ?

है नहीं पर्याप्त
केवल मौन
केवल ताल
चाहिए आकाश भी तो
सुमन जिस पर लिख सके
निज हास !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चाहिए बहती हवा जो ढो सके
गन्ध का संगीत,
सात रंगों में बिखर जाये
किरण वह !

एक नन्हें फूल को भी चाहिए—
एक पूरा विश्व !

दे सकोगे क्या
निखिल ब्रह्माण्ड—
एक नन्हें पुष्प को ?

मित्र मेरे बन सकोगे क्या ?

पल सकोगे छाँह में क्या,
एक-दूजे की ?

ताप भी क्या,
सह सकोगे ?

30.12.85

सेना नहीं, तो फिर

कहते हैं :
कोयल अपने अण्डे नहीं सेती ।
अण्डे वह
कौओं के घोंसलों में धर देती ।

कोयल नहीं सेती अण्डे
उसकी मर्ज़ी;
सेना नहीं, तो फिर···
अण्डे वह क्यों देती ?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

... अँधेरों पर

एक किरण काफ़ी है
अँधेरे दूर रखने को।

आदमी सीख ले अगर
हँसना,
मुस्कान
आंसुओं में भी तैर सकती है।
एक किरण काफ़ी है
पराजय लादने को
अँधेरों पर।
पाँव बढ़ाये तो आदमी;
दूरियाँ सर झुकायेंगी।

20.8.82

तमाशा होगा

आसमान पर
लिक्खा है नाम अपना;
हवाओं में घोला है संगीत।
सूरज जब गुज़रेगा इस राह:
तमाशा होगा !

9.12.82

☐☐इत्यलम्।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पाठकीय

'प्रथम पाठक' होने का अवसर कैसे, इसकी विचिकित्सा अनावश्यक।

निष्पक्ष, निराग्रह, सही-सही और ठीक-ठीक यदि बताया जा सके कि (i) कविताओं ने कैसे आकृष्ट किया हमें, (ii) रसास्वादन कैसे हुआ, (iii) कैसे बना हमारे अन्दर उनके लिए अवकाश, (iv) सब दिशाओं में बहती संचेतना की धारा कैसे मुड़ पायी इन कविताओं की ओर, (v) कैसे हममें प्रवेश कर हमारे मानसिक-व्यक्तित्व में घुल-पच, आत्मसात् हुईं यह ··· तो, एक प्रकार से, निभ जाये हमारा दायित्व ! वैसा होता, मेरे देखने में आज तक आया नहीं।

अधिकतर तो ऐसी पाठकीय गवाहियाँ कवि-प्रवंचना के लिए होती हैं, दिखावा होता है अन्य बहुतेरे पाठक मुग्ध करने का। पर कौन भला, किसे मोह पाया है ? जो मोहता और जो मोहा जाता, दोनों के मोहने-मोहाने के अपने-अपने कारण होते हैं।

□

कविता : एक कंकरी। किसी खिलण्डरे बच्चे द्वारा फेंकी। निस्तब्ध पड़ी झील में छलाँग मारती 'गुड़ुप !' कंकरी धरती अपना तल। उसकी 'गुड़ुप' उठा देती लहरें और प्रतिध्वनियाँ, दोनों ! लहरें जो फैलतीं बड़े, और बड़े दायरों में। चल पड़ता एक चक्र-सा प्रकम्पन-विकम्पनमय !

विवेक-बुद्धि बेचारी मुग्ध-जड रह जाती। कविताएँ गहरे तल पैठ संस्कारित (conditioned) करने लगतीं हमें। तब पता चलता कि हमारी एक भूख थी। एक माँग उठ रही थी, बेपहचानी, आन्तरिक। कविता उसे पूरा करती। यदि कविता कोई 'वस्तु' है तो ऐसा ही होना चाहिए।

बेस्ट-सेलर्ज़ (bestsellers) के रिकॉड-अध्ययन से प्रत्यक्ष है कि जब कभी मानव की असंख्य, अनन्त, अपूरणीय वासनाओं का औचित्य मनवाने के लिए उन्हें सुविशालित रूप में अभिव्यक्ति दी गयी, लोग टूट के गिरे। तब भी लोकप्रियता मिलती जब, हमारी वह पीड़ाएँ जिनसे सामाजिक गौरव नहीं, निन्दा-उपेक्षा मिलतीं ···अनकहे दुःख, दबे-छिपे भय, सड़ी-मरी आशाएँ-आकांक्षाएँ कहीं से औचित्य पा जाती हैं (मात्र अभिव्यक्ति मिल जाने को हम में से अधिकतर लोग औचित्य का प्रमाण मानते हैं !) तब ऐसी अभिव्यक्ति देख हमें लगता —उठती थीं, उठी थीं, मुझमें भी यही बातें। हमारी ही तो हैं यह, अपनी बातें ! "वाह ! ख़ास मेरे जी की बात कह दी !" 'ग़ालिब' ने ऐसा होने को मात्र उक्ति-कौशल समझा :

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

देखना तक़रीर की लज़्ज़त कि जो उसने कहा
मैंने यह जाना कि गोया यह भी मेरे दिल में था।

अर्थात्, केवल कथन-कौशल से प्रतीति हुई ऐसी आत्मीयता की ! कहनेवाले के प्रति यदि प्रेमभाव हो तो सरासर मूर्खता की, उपहास्य बातें भी बड़ी आत्मीय लग सकती हैं, इससे केवल प्रेम का पता चलता है, किसी सचमुच की गुणवत्ता का मूल्यांकन नहीं हो सकता इसके आधार पर ! एक प्रकार का फ़रेब ही है यह कहना कि "गोया यह भी मेरे दिल में था !"

□

आदमियों की वस्तियाँ जो ठहरीं, वह तो नक़्क़ारख़ाना है आवाज़ों का। हमारी दुनिया हो चुकी है ध्वनि-प्रदूषित। अधिकतर आवाज़ें अनसुनी ही छोड़ देने का मनुष्य—मननशील, मन्त्रशुद्ध प्राणी—के मन ने अच्छा आयोजन कर रक्खा है ! यदि मूर्खतावश कोई प्रत्येक ध्वनि के लिए स्वयं को खुला छोड़ बैठे तो कर ले प्रत्यक्ष अनुभव, शोर-रोरमय रौरव का ! इसीलिए हम सुनते चुनकर 'अपना', जो मेल खाता हमसे, बैठता कोई जोड़ ! यह सुरक्षित तो अवश्य है, लेकिन इसने जो अविकास उपजाया—उधर भी उचटती-सी एक नजर ! हाँ, तो इस प्रकार के संस्कारण (conditioning) द्वारा सारी मानवता अपनी कुल श्रवण-क्षमता का बहुलांश गँवाये बैठी है। ठाने—दूसरे की हमें सुननी ही नहीं ! इसीलिए, इस मौसम में, जब सारी धरती पर कार्ल सागाँओं (Karl Sagans) की बम्पर फ़सल होनी चाहिए थी—एक मात्र कार्ल सागाँ, अकेले नमूने हैं मानवीय सम्भावनाओं के !

—तो, जिनमें निजी कारणों से हमारा रस होता, वैसी कविताएँ हम रटते—चुटीले उपयोग निकाला करते उनके—अपने मतलब के—इसीलिए हम वैसी कविताएँ देते उछाल ! वैसे—एक प्रसिद्ध वचन : "शस्त्र के रूप में जिसका उपयोग न हो सके, वह भी भला कोई कविता है ?" इस विशेषार्थ में तो प्रस्तुत संग्रह पूरा शस्त्रागार है !

□

ख़ैर, मेरे अनुभव में, कविताएँ भई, बोर चीज़ें होती हैं—उदास करतीं, रुलातीं, सपने बिगाड़तीं, घरौंदे तोड़ डालतीं—इसीलिए मेरा मन कविताओं के प्रति एक प्रकार का वैर-भाव पालता है ! कौन कहता है कि कविताएँ रोचक होती हैं ? पहले कभी, जब क़िस्से-कहानी भी कविता में होते थे, जब गणित, ज्योतिष, आयुर्वेदादि शास्त्र भी कविता ही में कहने की मजबूरी थी, तब थी रोचकता अनिवार्य गुण। 'रोचक' और 'रुचिकर' एक नहीं। अरुचिकर, कुरुचिपूर्ण अक्सर अतिरोचक पाया गया है। रुचिकरमहाअरोचक ! जब से कहानी, उपन्यास, फ़िल्म आदि आये—कविता विस्थापित पड़ी है। अब संचार के हर माध्यम का त्याज्य, सबका उच्छिष्ट कविता में उंडेला जा रहा है। बूदलियऽ (Boudlier), मलार्मे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(Malarme) को कौन कहे, डी०एच० लॉरेन्स (D. H. Lawrence) जैसे रस-सिद्ध महापुरुष भी इस दोष से नहीं बचे। नक़लची छुटभैयों की वन आयी। केवल पागल, सरदर्द पैदा करनेवाली, ऊटपटांग बातों का नाम पड़ गया कविता। निजी जीवन के लिए मैंने सिद्धान्त बना लिया कि "महान् आधुनिक कविता—केवल और केवल वही है जो मेरे भेजे में किसी तरह न समाये !" बड़ा आनन्द आता है इधर, यह देखकर कि 'महान् आधुनिक कविताएँ' ही लिखी जा रही हैं, प्रचुरतम मात्रा में। संयोग का आश्चर्य होता है, जब कविता आधुनिक भी होती है और समझ में भी आने लगती है ! मिला कोई अपना-सा रुद्धविकास ! पुलक हो उठती ! कोई और भी है, इस आधुनिक युग में जीता, 'अ-महान्', 'निराधुनिक', 'अ-कवि' ! इस संग्रह में खूब भरा है यह महादोष ! इन कविताओं का न केवल हर शब्द, हर पंक्ति, हर खंड, साफ़ झलकता चलता है आँखों के सामने—विल्कुल पारदर्शी हैं ये—वल्कि अपनी तरलता के मौलिक गुण के कारण सभी कविताएँ परस्पर जुड़ी हैं, जैसे संसार के सभी जलस्रोत—नदियाँ, सागर, महासागर—सब परस्पर जुड़े। पूरा संग्रह एकमेवता द्योतक।

तो वात कविताओं की चल रही थी। कविताएँ भरती हैं हमें किसी ऐसे से, जो पूरा-का-पूरा उलीच डालता है हमें। भरकर ख़ाली करती हैं कविताएँ ! हमारी दृष्टि अटका लेतीं, चखातीं अन्य दिशाओं की गन्ध। (हाँ, पता : गन्ध घ्राण-विषय।) अटकाव लगता हमें अशुभ। अशुभ लगे तो लगा करे। किरणें जव-जव, जैसे-जैसे कोण वदलतीं, हरियाली भी वही नहीं रह जाती। इस उद्घाटन से कुछ हमारे अन्दर भी तो उद्घटित होता है ! उसी घटना के महामोहमय जाल में आवद्ध जीव, भ्रमण करता विंधा, अनन्त कोटि योनियाँ। रहस्य का घोर आकर्षण !

□

हाँ-हाँ, सुना है भई, सुना है।

आदमी सामाजिक-संस्कारण (social conditioning) द्वारा प्रोग्रामित (programmed) है ! हाँ, असंख्य, ग़ैरमहसूस भौतिक, रासायनिक, जैविक, भूभौतिकीय, अन्तर-ब्रह्माण्डीय ऊर्जा किरणों द्वारा रचित आदमी का अस्तित्व, उनके समुच्चय रूप आकृति में आभासित। पर, आदमी का आन्तरिक पक्ष भी है। वह तो अपने अन्दर अनन्त अरवों ब्रह्माण्ड छिपाये बैठा है नऽ ! इन समुच्चयों के समुच्चय के अतिरिक्त भी है मनुष्य कुछ।

अतिरिक्त है मनुष्य की चेतना। उसका साक्षी। उसका द्रष्टा। द्रष्टा ही से तो कविता सिद्ध होती है। कवि अर्थात् द्रष्टा। वाग्मी कवि नहीं होता।

हाँ-हाँ, आनुवंशिकी और विकास महाशक्ति की भी ख़बरें हैं।

विकासक्रम व्यर्थ छाँट, श्रेष्ठ बचाने का आदी। आज तक आनुवंशिकता-सूत्र में हम लिये फिरते रहे हैं—पीढ़ियों के वैर-मद-मोह, क्षोभ-शोक, नित्याभ्यासी जडी-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भूत आदतें—घातक रोग ! विकासक्रम को रुचा नहीं यह। ज्ञान के एक विस्फोट से सिद्ध हुआ, संश्लिष्ट रूप में, कि मनुष्य अपने जीन्स का बेबस ग़ुलाम नहीं है। तभी तो सम्भव दिखती कार्ल सागाओं की बम्पर फ़सल !

हाँ, पितरों की कृपा से हमने वे जीन्स पाये जिनसे हम संचालित। वे ऊँचे सोपान थे हमारी विकास-यात्रा के। हम भी सोपान बने। स्वयं पर से गुज़ार दी अगली पीढ़ी। प्रजनन-तंत्र का जैविक, शुद्ध रासायनिक, हॉर्मोनिक खेल चला लाँघ काल। काल लाँघ मनुष्य फिर खड़ा तो है !

इसीलिए होती है हर पीढ़ी की अपनी कविता।

हमारी, पचासे में पड़ी पीढ़ी की अपनी कविता : कुछ अलिखित, कुछ लिखित अप्रकाशित···कुछ कैसे-कैसे हो गयी है ! इतनी बहुत-सी प्रतिनिधि कविताएँ अपनी पीढ़ी की, दवाये बैठे थे यही सज्जन ! कुछ तो प्रकाश में आया। हमारी पीढ़ी के लिए उल्लास का विषय है। हो तो गया कालसन्तरण, हमारी पीढ़ी काल के पार चली। बीच में जो मौतवाली भयावह नदी थी, सर्जना के उत्ताप से भाप बनी, शायद थी ही नहीं···पर्याप्त यह, पितृ-ऋण चुकने को !

□

हाँ, तो प्रथम पाठकत्व मेरा।

जो—'वस्तुनिष्ठ होना चाहिए अध्ययन' इस सूत्रवश मार्ग धरें—वे नापें, जोखें, जाँचें, परखें; चीरें, फाड़ें, गर्म करें, ठण्डा करें, घोलें, फेंटें—जो करें, किया करें !

इसमें कुल जितनी (115) कविताएं हैं, जितनी हैं पंक्तियाँ—बीत तो गयीं पिछले पृष्ठों में सब। इतने (144) पृष्ठ, इतने शब्द—सब को सम्यक् बलाघात-संगम-संपुष्ट अनुतान में, आत्मसात् कर लेने के लिए पढ़ने से खुलन पैदा हुई। खुलन को, सोचिये, खुलापन कैसे कहा जाये ? मन का स्वभाव हर चोट पर संकुचन, वांछनीय तो क्षितिज-विस्तार। उसका प्रथम चरण खुलन !

इस खुलाव के कारण निजी होते नहीं, मात्र प्रतीत होते। अन्तर-ब्रह्माण्डीय महातरंगों द्वारा आविष्ट होकर ही आता हस्ती का वह खुलाव—खिलाव··· आविष्ट होने को दरकार तैयारियाँ !

हमने क़लम पकड़ना, अक्षर बनाना, लिखना, आशय व्यक्त करना, अपनी बात कहना—कविता के अन्य असंख्य उपकरण-उपाय अर्जित करने में जो श्रम किया—शब्द सीखे और व्यवहार के उपाय जान डाले, यह सब तो था कविता का राजमार्ग बनाने का उपक्रम—जब आयी हुई लिखने के मज़े लगते, चटख़ारे मिल जाते—तो सुकवि केवल अपना देखा कहते हैं !

मौलिकता की बहस, कविर्मनीषी एज़रा पाउण्ड से नीचे उतरते ही, ओछी हो जाती है ! अस्तित्वगत महा-ऐक्य में भी हर फूल की अपनी हस्ती। कोई नहीं

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नक़ल किसी की। जीन्स का एक-सा रखने वाला साँचा···पर कण-कण का अपना व्यक्तित्व !

□

प्रसादस्वरूप हज़रत मौलाना अबुलकलाम साहब आज़ाद की एक अभिव्यक्ति, उनके 'तज़किरे' से : "हाथ में मिक़्यास-ो-मीज़ान(फ़ीता-तराज़ू) नहीं, पहलू में रखा है हुस्नपरस्त दिल !" हुस्न का मामला विचित्र—"खुद हुस्न कमाले हुस्न है, यानी, हुस्न जहाँ है, कामिल है !" हाँ, सौन्दर्य जहाँ है, पूर्ण है, वही तो करता पूर्ण ! और तारल्य तो देखो—हुस्न जहाँ, वैसा व्यक्त : हुस्न हिमालय का, या, ताजमहल का, अजन्ता, एलोरा, ग्रीक मास्टऽर्ज़-माइकेल आञ्जिलो—झरने और पहाड़, शेर और मोर—सब के हुस्न पर नजर पड़ने के लिए गेस्ताल्त (gestalt) ही चाहिए दूसरा। हुस्न आज़ाद। उसकी मर्ज़ी। वह क़ाआनी के शब्द-सौष्ठव भरे अनुगुंजन से संगीत उठाये या सैफ़ो और क़ुर्रतुलऐन के राग जगाये—बिथोवेन और यहूदी मैनुहिन की कम्पोज़िंग्स से धड़कनें बढ़ाये दिल की, या, जो कर बैठे···

उसे—हुस्न को हर रंग, हर रूप में ताड़ जानेवाले 'नज़ीर' अकबराबादी तब से आज तक उपेक्षित ही पड़े हैं। धीमी-धीमी, दबी ज़बान से, बस, चर्चाएँ भर हो ली हैं। उनके पाठक को मिलीं नहीं अब तक उनकी रचनाएं। जाने किस डर से सर्वग्राह्य नहीं दिख पाते वह ! हम जितने विषबाण-विंधे सबका तोड़ नज़ीर की कविता !

□

खैर, तो अकेले फूल का सौन्दर्य और जादू जगाता। दो डालों के दो फूलों की पूर्णतः खिली अवस्था का सौन्दर्य दूसरा ही जादू घोलता बग़िया की हवाओं में ! पूरी बग़िया के सारे फूलों पर बहार आयी हो—तो, हुस्न का जो शहर बसता है उसकी मार बड़ी गहरी, काट विपुलधारी ! डँस लेता वह शहर ! सुना, उसका काटा पानी माँगे ना !

पहलू में हुस्नपरस्त दिल लेकर पढ़ना शुरू किया तो घिरा बिजलियों में !

हुस्न की यह चर्चा, हमारी, पचासे-पड़ी पीढ़ी की 'बुढ़भस'—मात्र नहीं, भाई ! यह उतना कुम्हलौना हुस्न नहीं। इसकी आयु धरा-सापेक्ष न होकर ब्रह्माण्ड-सापेक्ष ! जिस हुस्न का चुम्बक, रगों में दौड़ते लोहे से गर्म चिंगारियाँ छिटकाता—उसकी सुध लेने को अब तो बच्चे हैं ही—या पिछड़े पड़े लोग—बहुत कुछ में, हम से कहीं आगे !

हुस्न मौलाना साहब के 'तज़किरा' नामक सद्ग्रन्थ में चरम, सत्यशिवमय परम सौन्दर्य का प्रतीक ! हुस्न, इस सन्दर्भ में, उनका पावन चरित, जिन्होंने सत्य देखा और डटे। सत्ताओं को सदा रही उनसे अड़चन। शक्तिमान सत्ता कहाँ, कहाँ निहत्थे लोग। पर सत्यवालों ने वाणी, महाविद्या, महाशक्ति के उपयोग से कर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डाले अस्त्र-शस्त्र सब निरस्त ! वे हार कर जीते । मरकर जिये ! तैर गये, फलाँग गये कालनद ! बाँकी बात ! उस हुस्न की परस्तारी थोड़ा महँगा सौदा ! आँकी बात ! सदा रही है, सदा रहेगी महँगी—टाँकी बात !

□

बात, हर बार प्रस्तुत संग्रह से दूर खिसक जाती।

स्थितियाँ तीन ही हैं : समझा जाना । न समझा जाना । ग़लत समझा जाना —अतिमूल्यन वा अवमूल्यनवश ! ग़लत समझा जाना मात्र विपर्यय नहीं—जो वस्तुतः है, उससे सर्वथा भिन्न, और ही कुछ समझ लिया जाना—बड़े दर्द, बड़े क्षोभ की बात !

सोचना चाहिए—उस पर क्या बीतती, होना पड़ता जिसे ग़लतफ़हमियों का शिकार ! खँगालिये अपने अनुभव । सिद्ध होगा कि जो ग़लतफ़हमियों का शिकार होकर मज़े लेता—उसके पास हथियार बड़े पैने । लहजा धीमा, आवाज़ मद्धिम, शब्द रोज़मर्रा के, पर बात क़ातिल !

मुझे न समझना स्वीकार, खरबों बातें नहीं समझता, ग़लत समझना—कभी नहीं ! ग़लत समझ से तो उत्पात खड़े होते, विघ्न सभी प्रकार के जनमते ।

धीमे लहजे, मद्धिम आवाज़ में रोज़मर्रा के शब्द सन्देसे लाते हैं खुलन के ! अनसुनी करने की चीज़ नहीं ।

सामान्य बोलचाल के पहलूदार शब्द, जिनमें न ध्वनि-प्रदूषण, न आक्रमण चेतना पर, बातचीत ! चिंगारियों की फुलझड़ियाँ बीच-बीच ! जी, कविता इतनी दिलचस्प भी होती है !

□

अन्त में कुछ शब्दों पर संकेत, बृहत्तर हिन्दी जगत् के लिए :

टघरते=मात्र फिसलना नहीं यह । कुछ गलकर, खौलकर, उबलकर, उफन-कर बहने लगता है—गर्म लहर दौड़ती चलती । टघर जो पड़ता वह जाता है मिट्टी मिलने, या सीधे आग में !

झमोड़=हवा कमज़ोर टहनियों को मोड़ती, झकझोरती, मरोड़ती ! तीनों युगपत घटनेवाली क्रियाएँ एक शब्द में सिमटी ।

डौंक=शेरों की दहाड़, गरज, गर्जन—किसी पर्याय में प्रतिध्वनि नहीं । वही तो कई गुनी होकर थर्रा देती हर प्राणी को । चित्र अधूरा रह जाता किसी अन्य शब्द से । एक पुराना उदाहरण :

"वो कैसे हिलती है शेरों के डौंकने से कछार !"

सिहक=सबसे अधिक निकट "फड़क" से । सिहक उठती अचानक । हाथ, पाँव, नाभि, जंघा कहीं । फड़कन, सिहरन, कंम्पन, थिरकन, स्पन्दन—पाँचों का सुख-दुःख मिला झटका !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रुँद जाना="रौंदना" से "रुँदना" क्रिया। "रौंदे गये" "रौंदे हुए" अर्थ में !
किरनीले हाथ='कर' का एक अर्थ हाथ, दूसरा किरण, किरण-गुण सम्पन्न हाथ।
टहक लाल=दहकता अंगारा जिससे प्रकाश-ताप दोनों विकीर्ण। उस अरुणिमा का नाम "टहक लाल"। "टहक लाल टेसू के फूल" पुरानी अभिव्यक्ति।
बिटोरना=बटोरना, अर्थतः एक, उच्चारणतः भिन्न, बटोरने, संगृहीत करने के भाव से बढ़े हाथों का शब्द-चित्र प्रस्तुत करता !
ठेठाना=वेधड़क, बिन रुके, पूरे ज़ोर से मारते ही जाना; छत की पिटाई, बच्चे की; या हत्पतिका, सद्यःविधवा का सर, छाती, मुँह, जाँघ पीट-पीटकर विलाप,—तीनों अवसर "ठेठाने" के !

□

अर्थात्, यह संग्रह 'टॉनिक' की एक पूरी बोतल !

बहुश्रुत अनुमान है कि मनुष्य की चेतना ने अभिव्यक्ति के चार माध्यम आरम्भ ही में ढूंढ़ लिये। अब कौन पहले, कौन बाद, इस विवाद से कुछ तत्त्व हाथ नहीं आता। ये चार थे: चित्रांकन-चित्रलेखन, ध्वन्यांकन (=काव्य), नर्त्तन तथा गायन-वादन।

चित्रांकन मिटता। नृत्य-संगीत मात्र तात्कालिक। नर्त्तन बन्द। नृत्य समाप्त। गायन-वादन बन्द, संगीत-विलीन ! श्रुति-स्मृति के सहारे काव्य कुछ अधिक स्थायी। (चित्रांकन से मूर्तिकला तक की विकास-यात्रा का प्रसंग भी तत्काल छोड़ा।)

इसके साक्ष्य, यूँ तो प्राचीन सभ्यताओं के सारे इतिहास में विपुल। किन्तु काव्य, प्रतिष्ठित सर्वाधिक भारत ही में। (कालान्तरवश सर्वाधिक अप्रतिष्ठित भी यहीं। पर, यह दूसरा ही विषय।) प्रतिष्ठाकाल में हमारी जीवन-दृष्टि, जीवन-शैली ही हो गयी पूरी—छन्द-रस-अलंकारादि उपकरणों से बँधी कविता।

□

हमारे सब-से बड़े-'कवि', निर्विवाद रूप से भगवान् श्रीकृष्णद्वैपायन (=बादरायण) वेदव्यासदेव !

इसीलिए ज्ञान-विज्ञान रूप में, भारत का, जो भी अवदान है, विश्व को—वह या तो सूत्रवद्ध, वा श्लोकबद्ध ! 'सूत्र' और 'श्लोक' के भेद के प्रसंग पर चर्चा का अनवसर, फिर भी, बात छिड़ी तो कहने से नहीं चूकना चाहिए कि ऊँचे उत्ताप पर काव्य पहले वाष्पीभूत होता, फिर तरल होकर प्रवाहित होने लगता 'गिरा ज्ञान' रूप में। इस प्रक्रिया में रूपान्तर घटित हो जाता—श्लोक परिशोध प्राप्त

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कर, सूत्रसार में समाविष्ट हो जाते हैं। ढल जाते सूत्र-साँचे।

□

साहित्य के इतिहासकार, भगवान् वाल्मीकि को तो, कवियों की पङ्गत में घसीटते पाये गये हैं किन्तु भगवान् व्यास को 'कवि' कहने का साहस नहीं।

कवि रूप में, सामान्यतः विचरते जीव तो, अवचेतना क्या, अचेतना के तल पर, दुर्भारस्वरूप, जीवन का महाप्रसाद नष्ट करते, दिखते हैं। अँधेरे में बेचारे ठोकरें खाते। चीत्कार मारते, बिलक-बिलक कर रोते, गरज-गरज कर धमकियाँ देते—मगर यह सब नाटक-मात्र। जीवन की कोई व्यवस्था तनिक कँपती तक नहीं। कविता भी चल रही है, और, चला जाता सब कुछ, यथावत्, यथापूर्व।

इस कवि-पंगत से तो सुकविगण तक कतरायें—भगवान् व्यास तो बहुत ऊँचे। कहाँ समस्त ज्ञान-विज्ञानसम्भव के पूर्णतः पारगामी भगवान्, कहाँ कोई औचट-चपेट खाये, विकल बिललाते सुकविगण!

अतः समस्त भारतीय वाङ्मय का समुच्चयबोधक एक नाम—व्यास!

□

भगवान् व्यास ने स्वयं को 'कवि' नहीं कहा। कैसे कहते? वे तो द्रष्टा हैं। चिरञ्जीवी! बहुत बारीक बात—अमर नहीं। मरण का नकार कर जीता हुआ—अ-मर, नहीं। चिरञ्जीवी। जीवन को उसकी सम्पूर्णता-शाश्वतता में अङ्गीकार करते! जीवन की सबसे उत्ताल तरंगें और इसके अतल-वितल की गहनतम गहराइयाँ—सब समेटे, सब सम्हाले!

'कवि' शब्द का, भगवान् व्यास का जो प्रयोग, मुझे सबसे प्यारा है, वह है श्रीमद्भगवद्गीता के दशम अध्याय में : 'कवीनामुशना कविः' (श्लोक 37) अर्थात् 'मैं कवियों में उशना कवि हूँ!'

विभक्तिवश पद बना 'उशना', शब्द तो 'उशनस्=शुक्रग्रह के अधिष्ठाता देव का नाम है! भगवान् शुक्र, भगवान् भृगु के सुपुत्र। पातालवासी चिरञ्जीवी बलि के गुरुवर।

कहते हैं, बुद्धिमत्ता की ख्याति के कारण, शुक्रदेव का उल्लेख वेदों में 'काव्य' के नाम से है। ये गृह्यसूत्रों और धर्म-शास्त्रों के प्रणेता रूप में सुप्रतिष्ठित हैं। नागरिक-राज्य-व्यवस्था विषय के सबसे प्रामाणिक ज्ञाता।

भगवत्ता के जाज्वल्यतम अनुभवी के रूप में विख्यात रहे होंगे भगवान् शुक्र। अन्यथा, कैसे कह पाते भगवान् श्रीकृष्ण अर्जुन से : 'कवीनामुशना कविः'!

श्रीमद्भगवद्गीता और मनुस्मृति के अनुसार 'कवि' शब्द 'सर्वज्ञ' का पर्याय। इसके अन्य अर्थ—प्रतिभाशाली, चतुर, बुद्धिमान्, विचारवान्, विचारशील, प्रशंस्य। पुरुषवाचक 'कविः'=बुद्धिमान् पुरुष, विचारक ऋषि; कुछ दिनों तक 'काव्यकर्त्ता' के अर्थ में भगवान् वाल्मीकि के लिए यह शब्द रूढ़ था। परन्तु समस्त

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वेद-विद्याओं के आदि उत्स ब्रह्माजी के लिए भी इस शब्द का प्रयोग उपलब्ध। सब कुछ को स्पष्ट, यथावत् प्रकट कर देने वाले भगवान् दिनकर को तो, ख़ैर, ठीक ही 'कवि' कहा गया है !

'कवि' शब्द की व्युत्पत्ति <'कु' धातु में 'इ' प्रत्यय लगने से—कु+इ=कवि; 'कु' धातु भ्वादिगणीय रूप में 'ध्वनि करना'। तुदादिगणीयरूप में—'बड़बड़ाना', 'कराहना', 'चिल्लाना', 'क्रन्दन करना'। अदादिगणीय रूप में—'भिनभिनाना', 'कूजना', 'गुंजन करना' जैसे अर्थ ग्रहण करती है !

आज, जब हम शब्द 'कवि' प्रयोग करते हैं तो इसमें उपर्युक्त सभी अर्थों का समाहार होता है।

बार-बार कहा जा रहा है कि मात्र पागल विवक्षा काव्य नहीं है। वाग्मिता तो काव्य है ही नहीं। फिर भी दिनानुदिन वाग्मियों की संख्या शत-सहस्रगुण बढ़ती गयी। चढ़े चले जाते वाग्मी।

□

आगे बढ़ने से पहले एक और संकेत—

हम अतिक्रमणों के युग में। कोई सीमा नहीं जो अतिक्रमित न हो। विकास के साधन-अवसर दोनों जिसे उपलब्ध हों, वह भला निचला बैठे, न करे अपना क्षेत्र-विस्तार ? खेद का अवसर है कि कविता निचली बैठी और अपना अधिकतर क्षेत्र गँवा बैठी।

पहले सौन्दर्य-चित्रण का कौशल दिखाती थी कविता। यह क्षेत्र पूरा छिन गया। अच्छी-से-अच्छी कविता सौन्दर्य को उस तरह प्रत्यक्ष नहीं कर सकती जैसे मामूली कैमरे। कविता शब्दों में अनुभूतियाँ पैक किया करती थी। विश्वसनीयता-सुन्दरता अधिक वीडियो-ऑडियो रिकॉर्डिंग में। कथा-कहानी का क्षेत्र तो कविता से छिने युगों बीते। कथा-प्रस्तुतिकरण की कला—कहानियों, उपन्यासों, फ़िल्मों से होती हुई कहीं आगे जा चुकी।

भारत का अन्तिम मुग़ल सम्राट् बहादुरशाह 'ज़फ़र' लाल क़िले भर में सीमित रह गया था। इस पर एक-से-एक दर्दनाक चर्चाएँ हुई हैं। कविता जो मनः-प्रदेश रूपी लाल क़िले में डेढ़ सदियों से क़ैद भोग रही है, इस पर एक आँख नम नहीं दिखती। जबकि कविता की क्षमता स्वयंसिद्ध है। यह उत्कृष्टतम-निकृष्टतम दोनों को, जो भी हममें दबा हुआ हो, जगा दे सकती है। पाशविक कविताएँ भी दिखती हैं, दैवी भी। कविता जब कभी किसी भीड़ को आविष्ट कर लेती तो असम्भव सम्पन्न करा देती।

क्रान्ति की कल्पना-मात्र से लोग कँपे जाते। क्रान्तियाँ बड़े धमाके करतीं, बहुत धुआँ उगलतीं, ढेर सारी बारूद की गन्ध फेफड़ों में अनायास भर देतीं और खून कितना बहातीं इसका ठीक अनुमान तक नहीं। और, हमें जानना चाहिए कि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'कविता' 'क्रान्ति' की सगोत्रा। कविता से लोगों को इसी कारण भय। भला हमारे 'शान्तिप्रेमी' क्रान्ति का मार्गरोध करने से कैसे चूकें ?

इसीलिए 'छायावाद' से 'अकविता' आदि तक के सारे आन्दोलन ! इन तथाकथित सारे आन्दोलनों के मूल में 'क्रान्ति' को विमुख कर देने का एकमात्र उद्देश्य। इसीलिए 'छायावाद' हो या 'नकेनवाद' —सबका सीधा अर्थ सामान्यजन ने ग्रहण किया : अब कविता कोई ऐसी वस्तु बन गयी है जिसमें सामान्य लोगों को कोई रस नहीं मिल सकता। अब जो कविता है, उन असामान्य लोगों के लिए है जो विचित्र पारिभाषिकों से बोझल, शुद्ध पाखण्ड की वह भाषा बोलते हैं जिसका काम कभी साधारण लोगों को नहीं पड़ता।

'साहित्य' का अर्थ ही हो गया, वह बातें जो सामान्य उपयोग की नहीं।

जन-सामान्य कुछ पढ़ने के लिए फ़िल्मी ढंग के उपन्यासों, कहानियों, सत्यकथाओं आदि पर निर्भर हो गये। कविता की माँग पूरी करने के लिए फ़िल्मी गीत थे ही। अधिक परिष्कृत रुचिवाले लोकधुनों या शास्त्रीय संगीत में रुचि बढ़ाने लगे।

प्रामाणिक जानकारी है मुझे, कि सौ वर्ष बीत गये—अब तक हमारी सत्तर करोड़ जनता तक भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र तक नहीं पहुँचाये जा सके। छायावाद, नकेनवाद, प्रतीकवाद, अकवितावाद आदि के वितण्डावादों की कौन कहे ?

□

"हैं राग उन्हीं के रंग भरे औ' भाव उन्हीं के साँचे हैं
जो बेगत, बेसुर-ताल हुए बिन ताल पखावज नाचे हैं"

'नज़ीर' अकबराबादी साहब की यह बात—'साँचे भाव' पर बल देकर—आज भी प्रासंगिक। 'नज़ीर' जी की गरिमा यही, कि, उन्हें वह सब सुस्पष्ट दिखता जो औरों की आँखों से ओझल। इसी आधार पर वे आज तक अक्षम्य !

जी, वाङ्मय का लोक है यह। यहाँ बहुत दिनों से ऐसा ही 'राज' : पहले तो बेकार के ऐसे विवाद खड़े किये जाते कि जनता तक पहुँचकर ख़तरनाक बन सकने वाली कविता रची ही न जा सके। यदि कोई लुक-छिपकर ऐसा लिख ही बैठे तो उसे ऐसा अदेखा करना कि लोगों तक वह पहुँच ही न पाये। जी चाहता है 'मीर' जी का एक शेर सुनाने का :

'यही जाना, कि, कुछ न जाना हाय ! सो भी, इक उम्र में हुआ मालूम !'

□

कविता का कुछ भी रस पाने वाला हर व्यक्ति, सच्चे कारणों से, इस प्रश्न में उत्सुक है कि 'कविता कैसे होती है ?'

सच्ची उत्सुकता के उत्तर में कोरी बकवासें पिलायी जा रही हैं।

सीधी बात—

तैयारियाँ-सी होतीं, कुछ अभ्यास किये जाते, बस, बैठ लिखा जाता। कुछ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

काल तो मन हटता। फिर रमने भी कहीं लगता। मन अपनी कहे जाता। फिर 'भूर' फूट जाता। खुल जाता सोता कोई···फिर लहरें उठने लगतीं, अवचेतना के तल की! कुछ चेतना में चिन्तन, कुछ दुःख वही चिरन्तन। कुछ भय नये-पुराने। उत्साह बोल पड़ता। साहस भी जाग जाता। कुछ आहटें नयी भी! कुछ बादलों से वर्षा। फिर इन्द्रचाप खिलता···कुछ खेत लहलहाते। मिल प्रेम गीत गाते···

ऐसे ही, होने लगती; बस, होती तो हो जाती···

आरम्भिक अभ्यास चलते कुछ दिन। थोड़े दिनों तक केवल रेचन चलता रहता। फिर टेढ़ी-मेढ़ी पगडण्डियाँ तैयार होने लगतीं—कविता की। जिस दिन काव्य-रथ के योग्य प्रशस्त मार्ग बन जाता, कविता के रथ का घर्घर नाद भी स्पष्ट हो जाता। उस समय कविता आविष्ट कर लेती हमें। कविता होती पूर्णाधिकारिणी स्वामिनी। काव्यकर्मी मात्र उसका अनुगामी यान्त्रिक। कविता उससे जो कराती, करता। अन्दर से बही आती धारा। कभी-कभी तो बाढ़-सी, उत्प्लावन जैसी। कभी क्षीण भी पड़ती धारा। पर, सामान्यतः कविता एक अनवरत निर्झर।

हमारी ओर से इतना ही होता कि हम कविता को उपलब्ध रहते। कोई महत्त्वाकांक्षा हमें कविता से विमुख नहीं करती। तब कविता स्वयं पकड़ लेती है। हो जाती है। करनी नहीं पड़ती कविता। सुकवि वही, जो औचट चपेट में पड़ने से नहीं डरते।

❑

प्रस्तुत संग्रह की कविताएँ की नहीं गयीं, हुई हैं।

कवि श्री केदार नाथ सिंह हैं, राष्ट्रकवि श्री रामधारी सिंह दिनकर के दूसरे, एकमात्र जीवित-बचे पुत्र।

स्वनामधन्य महापुरुष होना कोई ऐसी-वैसी बात नहीं। 'स्वनामधन्य', जिनकी पहचान को स्वयं उनका नाम पर्याप्त होता। उन्हें अपने परिचय में किसी का नाम नहीं लेना पड़ता। स्वनामधन्य लोग भी एक अवस्था तक 'अमुक के पुत्र-पौत्र', 'अमुक के नाती-भगिना' कहे ही जाते हैं। अपना नाम लेने योग्य होने के लिए वयस्कता प्राप्त करनी पड़ती है। 'उशना कवि' की चर्चा पीछे हुई। उन्हें भी भगवान् भृगु के नाते जाना ही जाता है।

'स्वनामधन्य' महापुरुषों की सन्तान होने में भी एक दोष है। उनकी निजता का तिरस्कार। वे वे हैं, यह उन्हें कहने नहीं दिया जाता। उनसे सदा अपेक्षा होती है कि वे अपने को अपने पूर्व पुरुष के नाम से ही पहचानें। विकास-रोध का यह उपक्रम निष्प्रयोजन नहीं। जिसे अपनी निजता उपलब्ध नहीं होती, वह तो सहारा पकड़े, रुद्धविकास रह ही लेता है।

श्री केदार रुद्धविकास नहीं रह सकते थे। उन्होंने अपनी निजता के विकास

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के अतिरिक्त और कुछ में रुचि नहीं ली। प्रस्तुत कविताएँ उनकी इसी निजता का उद्घोष हैं ! ये कविताएँ प्रमाण हैं कि वे स्वयं हैं। आधुनिक अर्थों में भृगु के वही वंशधर !

□

इस संकलन की कविताएँ मुख्यतः 1982-85 के मध्य विरचित हैं। परन्तु ऐसा नहीं है कि लिखना उन्होंने 1982 से ही आरम्भ किया। लिखा करते थे वे पहले भी। 76-77 में भी उनकी कुछ कविताएँ मैंने देखी थीं।

इस संग्रह में जो कविताएँ हैं उनमें बहुतेरी मुझे प्रथम पाठ में अधूरी लगीं ! कुछ बाद में मैं समझ पाया कि प्रथम पाठ में अधूरा लगना ही तो पूर्णता थी इन कविताओं की। इन कविताओं ने भावों, विचारों, अनुभूतियों के सागर में हलचल मचायी। उठा दिये प्रश्न। चल पड़ा ऊहापोह। उठने लगीं तरंगें : यही तो थी इनकी सफलता। जीवन की कोई 'हस्त पुस्तिका' नहीं होती। 'हस्त पुस्तिका' बनने के लिए कविताएँ नहीं लिखी जातीं।

सफल कविता वही है जो हमारे दुःख-मोह भंग करती। जगाती हमारे अन्दर कुछ। इस अर्थ में इस संग्रह की प्रत्येक कविता सुकविता है।

इस आधार पर मैं कह सकता हूँ कि यह संग्रह और इसका प्रकाशन कोई नित्य नैमित्तिक कृत्य नहीं है। यह है कभी-कभी उगनेवाले धूमकेतु जैसा !

इस वर्ष हेली का धूमकेतु उदित होगा पश्चिम क्षितिज पर। उसी के साथ हिन्दी साहित्य के पूर्वाकाश पर उदित हुआ यह—'आँका सूरज, बाँका सूरज !' देखें, साहित्य के राज्य में 'नज़ीर' वाली गनि ही मिलती है इसे—पुनरुक्ति होती है इतिहास की; अथवा, कुछ शिक्षा मिली हमें अतीत से !

पढ़ें; परखें, निरखें ! लें, कुछ और निवेदित कर हटा जाता हूँ, बीच से !

"व्यासोच्छिष्टं जगत्सर्वं"-जैसी सूक्तियों का भाव, यही तो है, कि, भगवान् व्यास हमारे सबसे बड़े कवि। विस्मय यह कि स्वयं उन्होंने इस शब्द की छाया तक से बचने का प्रयास किया, पूर्वोक्त गीता (10/37) का पूरा भाव इस प्रकार :

"मैं वृष्णियों में वासुदेव,
पाण्डवों में धनञ्जय,
ऋषियों में व्यास
—और कवियों में उशना कवि हूँ !"

वे, वक्ताश्री, तो थे ही वृष्णियों में वासुदेव। यह भी निस्संशय, कि, सम्बोधित थे पाण्डवों में धनञ्जय, उक्त चारों की भगवत्ता भी विवादास्पद नहीं। इस वचन से प्रासंगिक प्रश्न उठता है कि आख़िर 'कवि' और 'ऋषि' में क्या भेद ?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'कवि' की कुछ चर्चा हो चुकी। अब थोड़ी बातें 'ऋषि' पर हों।

रूढ भाषाकोश में 'ऋषि' का व्युत्पत्तिपूर्वक अर्थ :

"[ऋष्+इन्, कित्;] 1. अन्तःस्फूर्त्त कवि या मुनि; मन्त्रद्रष्टा; 2. पुण्यात्मा मुनि, संन्यासी, विरक्त योगी; 3. प्रकाश-किरण।"

उलझा दी सारी बात, इस कोश-कर्म ने। इसका तो अभिप्राय यह हुआ कि 'कवि' तो 'कवि' हैं ही, 'ऋषि' भी कुछ और नहीं, कुछ बढ़े-चढ़े 'कवि' ही होते हैं!

आ गया मुक़ामे-अदब! 'बा अदब बा मुलाहिज़ा, होशयार!'

□

'मुनि' अर्थात् 'मौन को उपलब्ध' जिसके अन्तरतम में भी कहीं उत्कण्ठा-व्यग्रता नहीं।

'मन्त्रद्रष्टा' जो, मन्त्र देखे। 'मन्त्र' क्या?

'मन्त्र' शब्द का सम्बन्ध एक अर्थ-गुच्छ से। इस पर कोशोल्लेख :

"[मन्त्र्+अच्] 1. (किसी भी देवता को सम्बोधित) वैदिक सूक्त, [वेद के पाठ तीन—(i) छन्दोवद्ध और उच्चस्वर में वोला जानेवाला : ऋक्, (ii) गद्यमय और मन्दस्वर में वोला जानेवाला : यजुस्, और (iii) छन्दोवद्धता-गेयता संयुक्त : सामन्] 2. वेद का मात्र संहिता-पाठ (ब्राह्मण-भाग छोड़कर); 3. मोहन, वशीकरण या आवाहन के मन्त्र; 4. किसी देवता को उद्दिष्ट कर वोला गया प्रार्थनापरक यजुस्; 5. गुप्तवार्त्ता, मन्त्रणा, परामर्श, उपदेश, संकल्प, योजना; 6. गुप्त योजना या मन्त्रणा, रहस्य।"

—'मन्त्र' के जितने अधिक लक्षण एक साथ दिखें, उतना वड़ा 'मन्त्रद्रष्टा'। सम्पूर्ण अर्थ में जो देख पाये वह पूर्ण।

—तो, 'मुनि' और 'मन्त्रद्रष्टा' यह दोनों तो 'अन्तःस्फूर्त्त कवि' के ही उपलक्षण, आन्तरिक 'मौन' घटने के पूर्व मन्त्रदर्शन नहीं होता, 'मन्त्रदर्शन' के विना वह आन्तरिक स्फुरणा जागती नहीं जिसका सहज प्रवाह कवित्व।

तव शेष चारों (अर्थात् 1. पुण्यात्मा मुनि, 2. संन्यासी, 3. विरक्त योगी, और 4. प्रकाश-किरण) भी 'कवि' के ही उपलक्षण।

□

फिर भी—हमारा जनमानस संस्कारित कुछ इस तरह कि 'ऋषि' श्रेष्ठतर। 'कवि' भी श्रद्धेय, पर ऋषिवत् नहीं, तनिक न्यून।

तनिक-सी यह न्यूनता आख़िर कहाँ से आयी?

—कथा प्रसंग यह कि परम भागवत्पुरुष महाराज प्रह्लाद के पौत्ररत्न, विरोचन के सुपुत्र, महाराज बलि। देवता सन्तप्त उनसे। किन्तु ऐसा था नहीं, कि वे बध्य ठहरें, और, वराह-नृसिंह जैसे आकस्मिक अवतारों से काम चल जाये। तब भगवान् महाप्रजापति कश्यप और अदिति के घर, पहले योनिज अवतार हुए,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भगवान् वामन। फिर बलि छले गये।

भगवान् शुक्र के सम्मुख एक अपूर्व अवसर आया। परन्तु वे, संरक्षण-कर्त्तव्य-बद्ध, इस महाआयोजन में बाधक हुए। परिणाम यह हुआ कि बलि को मिल गयी चिरंजीविता, मिला अक्षय पाताल। शुक्रदेव गये उनसे बँध।

यही 'बद्धता' कविपन। इसीलिए शुक्रदेव कवि रह गये। ऋषि नहीं हुए।

इसकी तुलना भगवान् व्यास के व्यवहार से की जाये—

कौरव-पाण्डव दोनों उन्हीं के आत्मज। फिर भी जब महानाश के योग्य मुहूर्त्त उनसे पूछा गया तो उन्होंने शुद्धतम निकालकर दे दिया वह कराल मुहूर्त्त! इसी तत्त्व ने ऋषि का आसन थोड़ा उठा दिया।

□

'कवि' नहीं बच पाते। कम-से-कम अन्तिम पक्षपात—आदमी के प्रति—बाँधे ही रहता है! कुछ लोग दिखे हैं कवित्व-ऋषित्व की सीमा पर। कभी वे ऋषि होते हैं, कभी कवित्व पर उतर आते हैं। कवित्व से ऋषित्व की ओर छलाँग लगती तो फिसलन आ पड़ने पर रपटना भी पड़ता पीछे!

जिब्रान ख़लील: हिन्दी जगत् के जाने-पहचाने। इसके प्रत्यक्ष उदाहरण।

जिब्रान ख़लील की याद प्रस्तुत संग्रह के प्रसंग में भी मौक़े की। भारत की भूमि पर बातें करती वह आत्मा—तो, शायद इस संग्रह जैसी ही सरल, स्पष्ट, हृदयग्राहिणी, मार्मिक, फिर भी गूढ़-निगूढ़, परत-दर-परत होतीं बातें।

शब्दों की संक्षिप्त व्याख्या में जितनी बातों का उल्लेख हुआ, वे ही बीजरूप हैं। परवर्त्ती सारा काव्यशास्त्र बस, इन्हीं बीजों का पल्लवन-पुष्पण, इन्हीं का विस्तार। देशी-विदेशी सारे काव्यतत्त्वानुदर्शी-तलस्पर्शी विद्वानों की विशद व्याख्याएँ, बस व्याख्याएँ।

नव-रस साहित्य के यूँ ही नहीं ठहरा दिये गये। मनस्तत्त्व-ज्ञाता महापुरुषों ने सभी रसों की निष्पत्ति देखी थी, कविता से। वस्तुतः, रस-निष्पत्ति हो जाना, पर्याप्त है, काव्य की श्रेष्ठता के लिए, इतना ही चाहिए।

इस संग्रह में इस जन ने विगत 6 दिसम्बर '85 को हाथ लगाया। 7 को कुछ देखा। 8-9 को डूब गया। बात 10 तक समाप्त हो जानी चाहिए थी। नहीं हुई। आज तक इसके प्रभाव से बाहर नहीं निकल पाया। आज 3 फ़रवरी है।

इतनी-सी कविताएँ, इतने दिनों तक, ऐसे विचारों की तरंगें···यह संग्रह इस अंश तक तो सफल सिद्ध ही हुआ।

मैं, पाठक की अपेक्षा, इससे अधिक तो कुछ नहीं पाता, अपने मन में।

पटना,
3.2.86

स्वामी प्रेम ज़हीर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कविताएँ

पृष्ठानुक्रम से

शीर्षक	पृष्ठ	शीर्षक	पृष्ठ
हर मन में बस गया	7	दूर हो चुकी तुतलाहट	36
कोई परिचित पदचाप	9	आँसुओं की क़ीमत	37
आज यह··· ?	11	ख़बर देनेवाली कविता	38
नहीं लौट जायेगा	12	इससे भी बड़ी कोई	39
बाँध नहीं पाओगे	13	कुछ बीज गीतवाले	39
कहाँ नसीब होती है ?	14	वही वही है	40
भाग जाते	14	जब राह ही नशीली	40
बड़ा हो जाने दो, जन को	15	गति ज़रा कम	41
हवा की चाल शराबी	17	खाँसता-खाँसता दोहरा	42
चीख़ने को जिन्दगी लाचार	18	मरुस्थल बीच हरियाली	43
बहुप्रतीक्षित एक दिन	19	दर्द के क़तरे मिलाकर	43
टूट चुकी है	21	देखकर मँझधार को	44
अविकसित देश के नागरिक	23	गद्गद यह गान	45
बुरी तरह शरमाते	24	कैसे कर पाते होंगे प्यार	46
विदेशी आवाज़ों से बेहतर	25	अपने सारे प्रश्न ठुनकते	47
कविताओं का इस्पात	26	डाल तक आने से रोक	47
पसीनों नहाये भारिये	28	अधिकार नहीं होता	48
ख़याल रखना	29	कितनी गर्मजोशी	49
एक हाथ करुणा का	30	उत्तर सिर्फ़ चुप	50
कटखनी कुतिया	30	नक्षत्रों के हुक्म पर	51
सिहको सहसा	31	कि जैसे क्षोभ से भरता	52
पालतान दिया	31	खरा सोना बचाने को	54
चेग्वेवेरा	32	गह्वर में कुछ	56
कविताओं से कटेंगे	33	आँका सूरज, बाँका सूरज	57
सूर्योदय में कोई चीज़	35	चित्त पड़े तिलचट्टों की नगरी में	58

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शीर्षक	पृष्ठ	शीर्षक	पृष्ठ
हँसे खिवैया ताके नैया	60	कुछ सूखे, कुछ बाढ़ें	110
आसमान के टुकड़े पसन्द नहीं	61	अचम्भा है	111
बिजलियाँ सोख सके	62	यह भी···वह भी	112
तू न रही तू	63	भूले रहेंगे कब तक	113
कभी नहीं रुकती	64	बर्फ़ीली क़ैद के दौर से	115
जीने को रोता	66	बस, हुक्म की तामील	116
स्थिर रहे पत्ता	68	इस मिलन-स्थल पर	117
कंगूरे गिरना स्वाभाविक	69	खड़े होने को	118
फिर ऐसा हुआ	71	असलियत के आकाश पर	120
देखभाल का भार	73	कुतूहलवश भर लेते घावों से	121
एक को चुनना क्यों ?	75	प्रश्न नहीं छोड़ता साथ	122
बचपन को भानेवाला	76	नयी दुनिया ईजाद करे	125
लौट जायेगा	78	पथप्रदर्शक पाँव में ज्यों शूल	127
तुम होते हो	80	किसी अन्धे विवर में एक दुनिया	128
चिटकता हुआ; शीशे का	81	मत पूछो	130
एक सवाल पैदा होता है	83	पीली पड़ती जा रही आदमियत	131
रास नहीं आता	87	क्यों उन्हें मारे डालते ?	132
ज़ख़्म पर बेसाख़्ता उंगली	88	हाथ में जनमी सुगन्ध	133
कैसे बढ़ सकेगी, आगे ?	89	घुला दो लाल पानी में	134
सूरज का भी मिटता प्रमाण	90	नीला होता ही	135
आँधियाँ पीछे	91	कहाँ आया हमें	136
क़िस्सापसन्द डरता है	92	तेज़ाब जला देता	139
उड़ आ रे !	93	कट-कटकर बिकते देखा	140
दो आँखों में आन सिमटता	94	अनजानी बस्ती में कोई	141
सुस्ता सके सौभाग्य	96	आदमी : गौरैयों की तरफ़	142
सूरज बिल्कुल नया-सा	97	बग़ल में खड़ा नहीं दोस्त	144
ज़्यादतियों की उपज	99	पसन्द करते पथरीली राह	146
निदानों का नाम देश	102	एक नन्हें फूल को भी चाहिए	147
पाँव से उठ, माथे पर	103	सेना नहीं, तो फिर	149
हठ ठानकर	105	···अँधेरों पर	150
हिल गयी लौ	106	तमाशा होगा	150
गाने लगता द्वीप	107	किसी एक का, कभी नहीं	कवर-4
थोड़ा-सा प्यार, बीज-सा	108		

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कविताएँ

वर्णानुक्रम से

शीर्षक	पृष्ठ	शीर्षक	पृष्ठ
···अँधेरों पर	150	कविताओं से कटेंगे	33
अचम्भा है	111	कहाँ आया हमें	136
अधिकार नहीं होता	48	कहाँ नसीब होती है ?	14
अनजानी बस्ती में कोई	141	कि जैसे क्षोभ से भरता	52
अपने सारे प्रश्न ठुनकते	47	कितनी गर्मजोशी	49
अविकसित देश के नागरिक	23	किसी अन्धे विवर में एक दुनिया	128
असलियत के आकाश पर	120	किसी एक का, कभी नहीं	कवर-4
आँका सूरज : बाँका सूरज	57	क़िस्सापसन्द डरता है	92
आँधियाँ पीछे	91	कुछ बीज गीत वाले	39
आँसुओं की क़ीमत	37	कुछ सूखे, कुछ बाढ़ें	110
आज यह···?	11	कुतूहलवश भर लेते घावों से	121
आदमी : गौरैयों की तरफ़	142	कैसे कर पाते होंगे प्यार	46
आसमान के टुकड़े पसन्द नहीं	61	कैसे बढ़ सकेगी, आगे ?	89
इस मिलन-स्थल पर	117	कोई परिचित पदचाप	9
इस से भी बड़ी कोई	39	क्यों उन्हें मारे डालते ?	132
उत्तर सिर्फ़ चुप	50	खरा सोना बचाने को	54
उड़ आ रे !	93	खड़े होने को	118
एक को चुनना क्यों ?	75	खाँसता-खाँसता दोहरा	42
एक नन्हें फूल को भी चाहिए	147	ख़बर देनेवाली कविता	38
एक सवाल पैदा होता है	83	ख़याल रखना	29
एक हाथ करुणा का	30	गति ज़रा कम	41
कंगूरे गिरना स्वाभाविक	69	गद्‌गद···यह गान	45
कट-कटकर बिकते देखा	140	गह्वर में कुछ	56
कटखनी कुतिया	30	गाने लगता द्वीप	107
कभी नहीं रुकती	64	घुला दो लाल पानी में	134
कविताओं का इस्पात	26	चिटकता हुआ शीशे का	81

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

शीर्षक	पृष्ठ
चित्त पड़े तिलचट्टों की नगरी में	58
चीख़ने को ज़िन्दगी लाचार	18
चेग्वेवेरा	32
जब राह ही नशीली	40
जीने को रोता	66
ज़ख्म पर बेसाख्ता उंगली	88
ज़्यादतियों की उपज	99
टूट चुकी है	21
डाल तक आने से रोक	47
तमाशा होगा	150
तुम होते हो	80
तू न रही तू	63
तेज़ाब जला देता	139
थोड़ा-सा प्यार, बीज-सा	108
दर्द के क़तरे मिलाकर	43
दूर हो चुकी तुतलाहट	36
देखकर मँझधार को	44
देखभाल का भार	73
दो आँखों में आन सिमटता	94
नक्षत्रों के हुक्म पर	51
नयी दुनिया ईजाद करे	121
नहीं लौट जायेगा	12
निदानों का नाम देश	102
[illegible] होता ही	135
पथप्रद[illegible] पाँव में ज्यों शूल	127
पसन्द करते पथरीली राह	146
पसीनों नहाये भारिये	28
पाँव से उठ, माथे पर	103
पाल तान दिया	31
पीली पड़ती जा रही आदमियत	131
प्रश्न नहीं छोड़ता साथ	122
फिर ऐसा हुआ	71

शीर्षक	पृष्ठ
बग़ल में खड़ा नहीं दोस्त	14
बचपन को भानेवाला	7
बड़ा हो जाने दो, जन को	1
बर्फ़ीली क़ैद के दौर से	11
बस हुक्म की तामील	11
बहुप्रतीक्षित एक दिन	1
बाँध नहीं पाओगे	1
बिजलियाँ सोख सके	6
बुरी तरह शरमाते	
भाग जाते	
भूले रहेंगे कब तक	1
मत पूछो	1
मरुस्थल बीच हरियाली	
यह भी···वह भी	1
रास नहीं आता	
लौट जायेगा	7
वही-वही है	4
विदेशी आवाज़ों से बेहतर	2
सिहको सहसा	3
सुस्ता सके सौभाग्य	9
सूरज का भी मिटता प्रमाण	9
सूरज बिल्कुल नया-सा	9
सूर्योदय में कोई चीज़	3
सेना नहीं, तो फिर	14
स्थिर रहे पत्ता	6
हँसे खिवैया ताके नैया	6
हठ ठानकर	10
हर मन में बस गया	
हवा की चाल शराबी	1
हाथ में जनमी सुगन्ध	13
हिल गयी लौ	10

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalg

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon